पाक्षिक

पाथेय कण

मूल्य ₹ 5

आश्विन कृ.14, युगाब्द 5122 वि.2077,16 सितम्बर, 2020

आदर्श संगठक, आत्मविलोपी –

मोरोपंत पिंगले

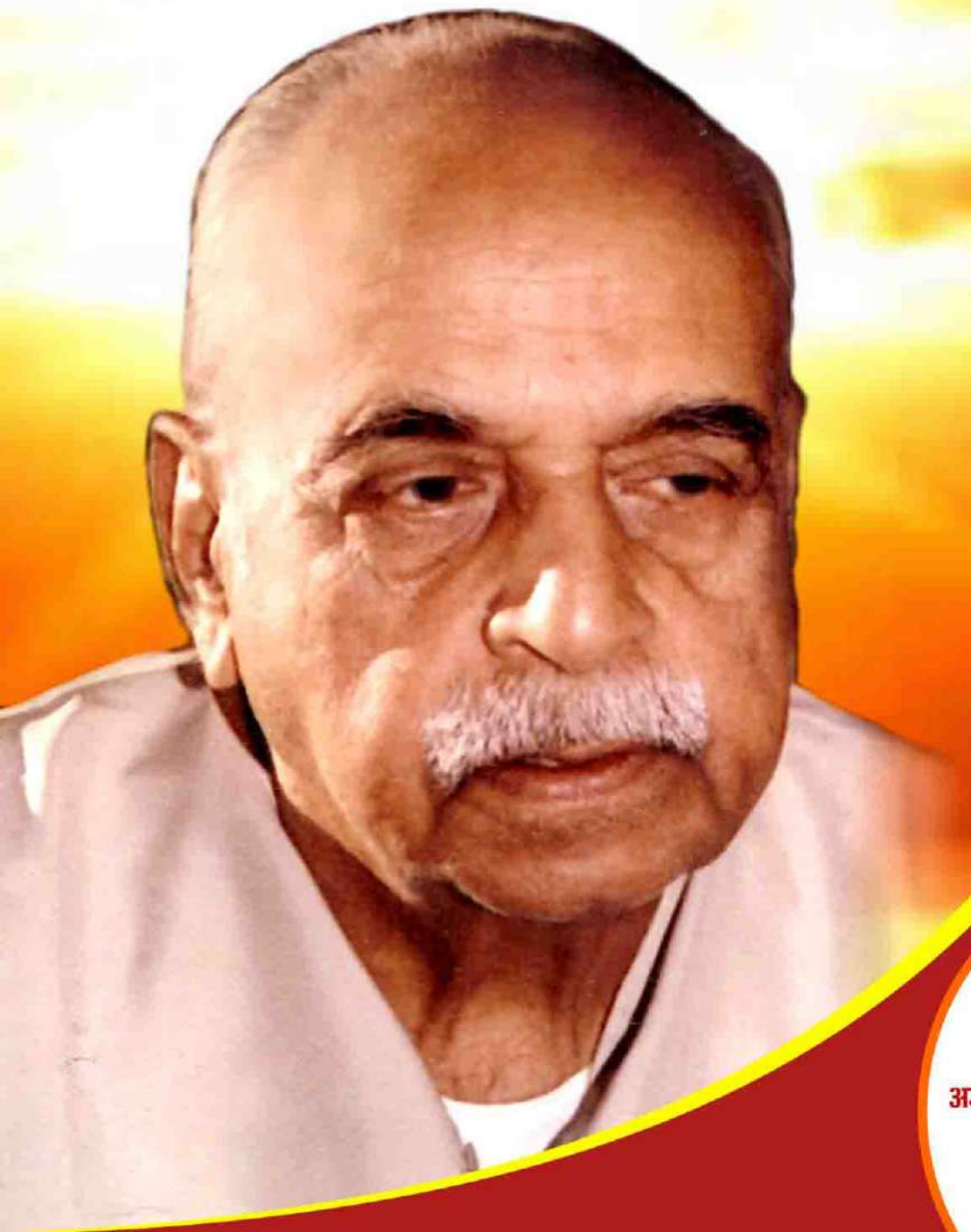

भीतर पढ़ें

एकात्म मानव दर्शन → 8

शिक्षा में 'पूरब' का चिंतन → 14

अजवायन के औषधीय प्रयोग → 15

मोरोपंत जी पिंगले - कुछ छाया स्मृतियाँ

श्रीगुरुजी के साथ श्री मोरोपंत जी (मध्य में) बांई ओर हैं तत्कालीन फिल्म निर्माता निर्देशक श्री भाल जी पेंढारकर

बांए से श्री मोरोपंत जी, श्री रज्जू भैय्या व श्री प्रहलाद अभ्यंकर

6 दिसम्बर 1992 को अयोध्या में बाएं से श्री मोरोपंत पिंगले, श्री हो.वे.शेषाद्रि व श्री कु.सी.सुदर्शन जी

दत्तोपंत जी ठेंगड़ी के साथ मोरोपंत जी पिंगले

मुंबई में जनकल्याण बैंक के एक कार्यक्रम में श्री मोरोपंत पिंगले के साथ तत्कालीन विपक्ष के नेता श्री मनोहर जोशी

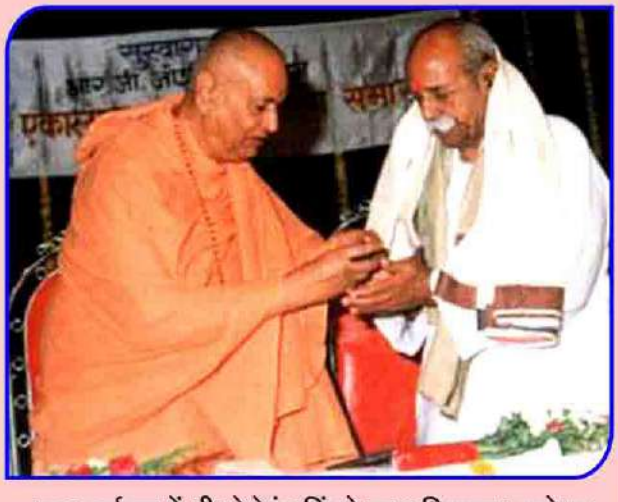

एक कार्यक्रम में श्री मोरोपंत पिंगले का अभिनन्दन करते हुए स्वामी सत्यमित्रानंद जी महाराज

।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।।
संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

**मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन।
राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।**

पाक्षिक
पाथेय कण
आश्विन कृ.14, युगाब्द 5122, वि.2077
16 सितम्बर 2020
वर्ष 36 : अंक 09

परम सुहृद पाठक–गण,

सप्रेम नमस्कार।

सभी कार्यकर्ताओं से आग्रह है कि वार्षिक व 15 वर्षीय पावतियाँ जल्द से जल्द कार्यालय पर भिजवाने का श्रम करें। राजस्थान के 15 वर्षीय सदस्य जयपुर शहर के वार्षिक व 15 वर्षीय अंक डाक से भेजे जा रहे हैं अंक प्राप्त न होने की स्थिति में कार्यालय में संपर्क करें।

जुलाई द्वितीय से अब तक 5 अंक प्रेषित किये जा चुके हैं। अंक न मिलने पर पाठक खंड (तहसील), जिले के कार्यकर्ताओं से संपर्क करें। आशा है कि राष्ट्र जागरण के इस कार्य में आपका सहयोग निरंतर मिलता रहेगा।

इसी विश्वास के साथ

जय श्रीराम।

आपका

प्रबंध सम्पादक

सहयोग राशि

□□□ ₹ 1□0/- पन□□□ ₹1□00/-

प्रबंधकीय कार्यालय

'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर–302017 (राज.)
सम्पर्क : 7976582011, 9414447123,
9929722111

Website: www.patheykan.in
E-mail: patheykan@gmail.com

भारत की रणनीति के आगे विस्तारवादी चीन पस्त

चीन की विस्तारवादी नीति 1949 की कम्युनिस्ट क्रांति से भी पुरानी है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद चीन ने तुर्किस्तान का 16.6 लाख वर्ग किमी क्षेत्र अपने में मिलाया जो अब शिनजियांग प्रांत है। 1951 में उसने तिब्बत पर कब्जा कर 12.28 लाख वर्ग किमी क्षेत्र हड़पा। इसी तरह उसने 11.83 लाख किमी क्षेत्र इनर मंगोलिया, 36197 वर्ग किमी क्षेत्र ताइवान, 1106 वर्ग किमी क्षेत्र हांगकांग तथा 38000 वर्ग किमी अक्साई चिन क्षेत्र भारत का अवैध रूप से कब्जा किया है। पाकिस्तान, नेपाल, भूटान के भूभाग को भी इसने प्रेम, प्रलोभन, धोखे से अथवा सीमा विवाद पैदा कर अपने में मिलाया। इस प्रकार चीन के लगभग 96 लाख वर्ग किमी में से 40% अवैध रूप से कब्जाया हुआ है। इन क्षेत्रों को अपने में मिलाते समय इन्हें स्वायत्तशाषी घोषित किया, लेकिन कुछ सालों बाद ही इन स्थानों के मूल निवासियों की भाषा, धर्म, संस्कृति को नष्ट करने के लिए चीन की भाषा तथा संस्कृति थोपने की कार्रवाई की। इसके अलावा चीन ने जापान, वियतनाम, ताइवान, थाइलैण्ड आदि देशों के अनेक द्वीपों पर भी कब्जा किया है तथा पूरे प्रशांत–हिन्द महासागर (दक्षिण चीन सागर) पर कब्जा करने की फिराक में है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का 20% से अधिक भाग इस समुद्री रास्ते से परिवहन होता है।

चीन भूतकाल में की गई किसी भी संधि को नहीं मानता, न ही वह अपनी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा को चिन्हित करता है। परिणामस्वरूप अपनी ताकत के बल तथा ऐतिहासिक बातों के आधार पर दूसरे देशों के भूभाग को अपना बताने का मार्ग खुला रखता है। इसी क्रम में वह पड़ोसी देशों से शांति–सद्भाव की बात करने के साथ अपनी सेना को निरन्तर उन देशों की सीमा में घुसपैठ कराने, वहां कुछ निर्माण करके कुछ अवधि बाद अतिक्रमण वाले क्षेत्र को अपना क्षेत्र घोषित कर देता है। एक बात और, पिछले 30 वर्षों में चीन की आर्थिक समृद्धि के साथ ही उसने अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तक अपने क्षेत्र में आधारभूत ढ़ांचे, विशेषकर सैन्य ढ़ांचे को काफी मजबूत किया है।

भारत के सीमा विवाद की जड़ में भी चीन की यही नीति है। ब्रिटिश शासन के समय तिब्बत तथा भारत के बीच निर्धारित अन्तर्राष्ट्रीय सीमा (मेकमोहन लाइन) को चीन मानने को तैयार नहीं है। उसने न केवल 1962 के युद्ध में अक्साइ चिन क्षेत्र पर अवैध कब्जा किया बल्कि अभी भी उत्तराखण्ड, सिक्किम तथा अरुणाचल प्रदेश (जिसे वह तिब्बत का दक्षिणी भाग कहता है) के लगभग 90000 वर्ग किमी क्षेत्र पर आंखें गड़ाए बैठा है। भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने हिन्दी चीनी भाई–भाई तथा पंचशील के मुगालते में ताइवान के स्थान पर चीन को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाई, भारत के लिये प्रस्तावित संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा →

**संतोष अमृत तृप्तानाम् यत् सुखम् शांतिः एव च।
तत् धन लुब्धानाम्, इतश्चेतश्च धावाताम्।।**

आचार्य चाणक्य के अनुसार संतोष के अमृत से तृप्त व्यक्तियों को जो सुख और शांति मिलती है, वह सुख और चैन धन के पीछे सदैव इधर उधर भागने वालों के भाग्य में नहीं होता।

(चाणक्य नीति शतकम्)

आगामी पक्ष (1-15 अक्तूबर 2020) *के विशेष अवसर*

{ आश्विन (अधिक) पूर्णिमा से आश्विन (अधिक) कृष्ण 13 तक }

जन्म दिवस

2 अक्तूबर (1869)- राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयन्ती

2 अक्तूबर (1904)- भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयन्ती

4 अक्तूबर (1857)- सागर पार क्रांति के अग्रदूत श्यामजी कृष्ण वर्मा की जयन्ती

6 अक्तूबर (1893)- वैज्ञानिक डॉ. मेघनाथ साहा की जयन्ती

7 अक्तूबर (1907)-क्रांतिकारी दुर्गा भाभी की जयन्ती

9 अक्तूबर (1877)- उत्कलमणि गोपबन्धु दास की जयन्ती

9 अक्तूबर (1907)- संघ के गृहस्थ प्रचारक प्रभाकर बलवन्त (भैया जी) दाणी का जन्म

11 अक्तूबर (1916)- प्रचारक तथा आधुनिक चाणक्य नानाजी देशमुख की जयन्ती

14 अक्तूबर (1884)-गदरपार्टी के संस्थापक लाला हरदयाल की जयन्ती

15 अक्तूबर (1931)-पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न एपीजे अब्दुल कलाम की जयन्ती

15 अक्तूबर (1883)-महात्मा आनन्द स्वामी का जन्म

अन्य

7 अक्तूबर (1556)- हिन्दू सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य दिल्ली एवं आगरा के सिंहासन पर आरूढ़ हुए

8 अक्तूबर (1984)- बजरंग दल की स्थापना

3 नवम्बर (1708)- गुरू गोविन्द सिंह जी ने ग्रंथ साहब को गुरू घोषित किया

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

4 अक्तूबर (1857)- रामगढ़ बटालियन के जयमंगल पाण्डे तथा नादिर अली की शहादत

8 अक्तूबर (1936)- उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद की पुण्य तिथि

10 अक्तूबर (1985)- हिन्दुस्थान समाचार के संपादक दादासाहब आप्टे की पुण्यतिथि

13 अक्तूबर (1911)- भगिनि निवेदिता की पुण्यतिथि

15 अक्तूबर (1857)- मुम्बई में मंगल पाण्डे, सैयद हुसैन को फांसी

15 अक्तूबर (1983)- राष्ट्रधर्म के प्रथम संपादक डॉ. राजीव लोचन अग्निहोत्री की पुण्यतिथि

→ परिषद के स्थाई सदस्य वाली सीट चीन को भेंट की तथा तिब्बत जैसे पड़ोसी राष्ट्र पर उसके अवैध कब्जे पर न केवल चुप रहे, बल्कि उसे चीनी क्षेत्र के रूप में मान्यता भी दी। यहीं राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मोदी नेतृत्व को समझने में चूक हुई लगती है क्योंकि मोदी मोदी है, नेहरू नहीं। मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने न केवल पड़ोसी देशों तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी विदेश नीति का पालन किया है, बल्कि देश भर में विशेषकर सीमावर्ती तथा दुर्गम क्षेत्रों तक सड़क, रेल, बिजली इत्यादि आधारभूत ढ़ांचा विकसित करने की ओर ध्यान दिया। लेह से दौलत बेग ओल्डी तक चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा के समानान्तर बारह-मासी पक्की सड़क का निर्माण तथा बीच-बीच में सीमा चौकियों को इस सड़क से जोड़ने की मुहिम चीन को रास नहीं आई। उसने मई माह में गलवान घाटी के फिंगर 4 से 8 तक भारतीय पैट्रोलिंग में बाधा डाली, जिसकी परिणति 15 जून की सैनिकों के बीच हाथा-पाई में हुई और दोनों पक्षों की जनहानि हुई।

चीन के संभावित दुःसाहस से बचने तथा अपनी रणनीतिक बढ़त बनाने के लिये भारतीय सेना ने 29-30 अगस्त की रात्रि में पेगांग झील के दक्षिण में स्थित हेलमेट टाप, ब्लेकटाप, मगर हिल, मुकपरी, रेजांग ला, रेचिन ला इत्यादि चोटियों तथा झील के उत्तर में फिंगर 4 की पहाड़ी चोटियों पर 1962 के बाद पहली बार सैनिकों को तैनाती कर दी। ऊँचाई पर भारतीय सैनिकों की उपस्थिति से बौखला कर चीन झूठे दावे कर रहा है कि भारतीय सैनिकों ने सीमा पार कर चीन में प्रवेश किया है। ये सभी चोटियां भारतीय क्षेत्र में ही हैं, किन्तु भारत की इस आकस्मिक अनपेक्षित कार्रवाई से चीन सदमे में है। अब चीन की मोल्डो छावनी तथा अनेक सैनिक पोस्ट भारतीय सैनिकों की निगरानी तथा निशाने पर हैं। बदले की भावना में जलते 50 चीनी सैनिकों की टोली 7 सितम्बर को गलवान घाटी जैसी योजना बना लोहे की रोड, फरसे, कांटेदार तार लपेटे डंडों के साथ मुकपरी पर कब्जा करने के लिये आगे बढ़े , किन्तु सजग भारतीय सैनिकों द्वारा ललकारने पर उल्टे पांव लौट गये।

चार माह से लम्बित मामले को सुलझाने के लिये अब चीन दबाव में है। आशा करनी चाहिये कि भारतीय सैनिकों के साहस, रणनीतिक कौशल तथा सैन्य सूझबूझ एवं सशक्त राष्ट्रीय नेतृत्व के समन्वित प्रयास सफल होंगे और दोनों देशों के सैनिक अपनी पूर्व स्थिति में लौट जाएंगे। सभी जानते हैं कि आधुनिक युद्ध के परिणाम भयावह होंगे, लेकिन परिणाम के भय से भारत अपनी राष्ट्रीय अस्मिता, सार्वभौमिकता से समझौता नहीं कर सकता, कम से कम मोदी के प्रधानमंत्री रहते तो बिल्कुल नहीं। यदि युद्ध हुआ तो चीन को तिब्बत तथा पाकिस्तान से जोड़ने वाले हमारे अपने अक्साई चिन को जीतकर चीन की आर्थिक कमर को तोड़ना भारत का लक्ष्य होना चाहिए। ■

अयोध्या आन्दोलन को जन आंदोलन बनाने वाले

आदर्श संगठक, आत्मविलोपी – मोरोपन्त पिंगले

संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री मोरोपन्त पिंगले को देखकर सब खिल उठते थे। उनके भाषण और वार्तालाप हास्य प्रसंगों से भरपूर होते थे, पर इसके साथ वे एक गहन चिन्तक और कुशल योजनाकार भी थे। संघ के नेतृत्व द्वारा सौंपे गये हर काम को उन्होंने अपनी कल्पनाओं के आधार पर सर्वश्रेष्ठ ऊँचाईयों तक पहुँचाया।

30 अक्तूबर 1919 को जन्मे मोरेश्वर नीलकण्ठ पिंगले बचपन से ही मेघावी होने के साथ-साथ बहुत चंचल व शरारती भी थे। 1930 में वे स्वयंसेवक बने और डॉक्टर हेडगेवार का सानिध्य पाया। 1941 में नागपुर के मौरिस कॉलेज से बी.ए. कर वे प्रचारक बने।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में अपने 65 वर्ष के कार्यकाल में उन्होंने अनेक दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। प्रारम्भ में उन्हें मध्यप्रदेश के खंडवा में सह विभाग प्रचारक बनाया गया। फिर वे मध्यभारत के प्रांत प्रचारक तथा महाराष्ट्र के सह प्रांत प्रचारक बने। क्रमशः पश्चिम क्षेत्र प्रचारक, आखिल भारतीय शारीरिक प्रमुख, बौद्धिक प्रमुख, प्रचारक प्रमुख तथा सह सरकार्यवाह दायित्वों के बाद वे केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्य रहे।

मोरोपंत जी को समय समय पर दिये गये विविध प्रवृति के कामों के कारण अधिक याद किया जाता है। 1974 में छत्रपति शिवाजी महाराज की 300 वीं पुण्य तिथि पर रायगढ़ में भव्य कार्यक्रम, पूज्य डॉ. हेडगेवार की समाधि (स्मृति मंदिर) का निर्माण तथा उनके पैतृक गांव कुन्दकुर्ती (आंध्र प्रदेश) में उनके कुलदेवता के मंदिर की प्रतिष्ठापना, बाबासाहब आप्टे स्मारक समिति के अन्तर्गत विस्मृत इतिहास की खोज, वैदिक गणित तथा संस्कृत के प्रचार-प्रसार, आपातकाल में भूमिगत रहकर तानाशाही के विरूद्ध आन्दोलन चलाने तथा वर्ष 1981 में मीनाक्षीपुरम कांड के बाद हिन्दू जागरण की जो अनेक योजनाएं बनी, उनके मुख्य कल्पक और योजनाकार मोरोपंत जी थे।

हिन्दू जन जागरण – 1981-82 में जब तमिलनाडु के मीनाक्षीपुरम में कुछ हरिजन परिवारों का सामूहिक धर्मान्तरण देश के लिये चुनौती बनकर आया तो मोरोपंत जी को विश्व हिन्दू परिषद के मार्गदर्शन का दायित्व सौंपा गया। इस चुनौती का सामना करने के लिये हिन्दू समाज में देशव्यापी जागरण की लहर तुरन्त खड़ी करना आवश्यक था। तब मोरोपंत जी ने संस्कृति रक्षा अभियान के अन्तर्गत एकात्मता यात्राओं की योजना तैयार की, विराट हिन्दू सम्मेलनों की रूपरेखा बनाई और 1984 से श्रीराम जन्मभूमि मंदिर आन्दोलन को देशभर में गांव-गांव और जन-जन तक पहुँचाने, अनेक पंथों में बिखरी संत शक्ति और इस संत शक्ति के विशाल अनुयायी वर्ग को इस आन्दोलन से जोड़ने की दृष्टि से एक के बाद एक अभिनव कार्यक्रमों की कल्पना की। इन कार्यक्रमों को परम्परागत प्रतीकों के माध्यम से जनभावनाओं से जोड़ा। अयोध्या आन्दोलन को इतना व्यापक रूप देने और विश्व हिन्दू परिषद को उसका सशक्त माध्यम बनाने में मोरोपंत जी का असाधारण योगदान है। उन्हें महाराष्ट्र में 'हिन्दू जागरणाचा सरसेनानी' (हिन्दू जनजागरण के सेनापति) की उपाधि से विभूषित किया गया था।

एकात्मता यात्रा – समस्त हिन्दू समाज को जात-पांत, पूजा-पद्धति, उत्तर-दक्षिण के भेद भुलाकर एक सूत्र में पिरोने के लिये मोरोपंत जी ने 1982-83 में पूरे भारत में एकात्मता यात्रा कार्यक्रम की योजना बनाई। इस कार्यक्रम में गंगामाता और भारत माता की आराधना के लिये गंगाजल और भारत माता के चित्र के साथ तीन यात्राएं प्रारंभ की गयी। पहली यात्रा हरिद्वार से चली थी और उसे कन्याकुमारी पहुँचना था। दूसरी यात्रा काठमांडू के पशुपतिनाथ मंदिर से चलकर रामेश्वरम जाने वाली थी। तीसरी यात्रा बंगाल में गंगासागर से सोमनाथ तक की थी। मार्ग में भिन्न-भिन्न स्थानों से सैकड़ों छोटी-छोटी यात्राओं का संगम इन बड़ी यात्राओं में होना था। लगभग 50,000 किमी की दूरी तय करने वाली इन यात्राओं को बीच में एक निश्चित समय पर नागपुर शहर में प्रवेश करना था। किसी को विश्वास नहीं था कि ये यात्राएं निर्धारित समय पर नागपुर पहुंच सकेंगी। पर यह चमत्कार घटित हुआ, क्योंकि इसके पीछे मोरोपंत जी का मस्तिष्क कार्य कर रहा था। उन्होंने प्रत्येक बड़ी यात्रा और प्रत्येक छोटी यात्रा के प्रत्येक पड़ाव की समय सारिणी की सूक्ष्मतम रूपरेखा पहले अपने मस्तिष्क में और फिर कागज पर तैयार कर दी थी। उन्होंने कपड़े पर तीनों यात्राओं की समय सारिणी के साथ भारत का मानचित्र तैयार कराया था।

तीनों यात्राओं के नागपुर पहुँचने से पूर्व मोरोपंत जी नागपुर पहुँच गए थे, वे यात्राओं में कहीं नहीं थे। अन्य नागपुर वासियों के समान ही उन्होंने भी यात्राओं को नागपुर में प्रवेश करते देखा। यह थी उनकी कार्यपद्धति। सब कुछ करके, उससे अलग, कहीं सामने नहीं। बिल्कुल ब्रह्म की तरह, जो सब कुछ करता है और कुछ नहीं करता, जो सब सृष्टि का रचयिता है पर स्वयं कहीं नहीं है। इन यात्राओं में पौने सात करोड़ देशवासियों ने भाग लिया और इस एक कार्यक्रम ने विश्व हिन्दू परिषद को अखिल भारतीय जन संगठन का रूप दे दिया।

अयोध्या आन्दोलन – अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति का आन्दोलन पिछले साढ़े चार सौ साल से चल रहा था, पर पिंगले जी की रणनीति ने इसे गांव- गांव और घर-घर तक

इस बींसवी सदी के उत्तरार्ध में हिंदुत्व का इतिहास यदि लिखा गया तो इसमें मोरोपंत पिंगले यह नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। इतनी बड़ी उड़ान उनकी प्रतिभा के कारण संभव हुई है। फिर भी उन्होंने प्रसिद्धि की आस नहीं की। अन्यों को वह मौका दिया। विश्व हिन्दू परिषद का एक प्रचण्ड कार्य निः स्पृहता से छोड़ दिया और दूसरे कार्य की ओर बढ़े। यह प्रचारक की विशेषता है। संघ की पद्धति में से आई है।

पूज्य डॉक्टर जी के जीवन से आई इस मनोवृत्ति को ही 'आत्मविलोपी वृत्ति' कहते हैं।... श्रेय लेना नहीं, यह जो आत्मविलोपी वृत्ति है उसका उत्कट आविष्कार मा.मोरोपंत में देखते आए हैं। उनके अनेक गुण हैं, कर्तव्य के अनेक पहलू हैं। लेकिन सब स्वयंसेवकों ने, कार्यकर्ताओं ने जिन जिन को राष्ट्र का गठन करना है, ऐसे सभी में सबसे महत्वपूर्ण तथा ध्यान में रखने लायक बहुत महत्व का गुण है आत्मविलोपी वृत्ति। ऐसे आत्मविलोपी वृत्ति के लोग ही इतने लंबे समय तक अडिगता से, जीवटता से कार्य कर सकते हैं। यह आत्मविलोपी गुण हम में से प्रत्येक कार्यकर्ता स्वयं में अंगीकृत करने का निर्धारण करें, यही मा. मोरोपंत जी का संदेश है, ऐसा मुझे कहना है।

– मा.दत्तोपंत ठेंगड़ी,

'वीर वाणी' पत्रिका दीपावली अंक २००३

पहुँचा दिया। उनकी योजना थी कि ज्यादा से ज्यादा लोगों का लगाव इस आन्दोलन से बने और इसी को धरातल पर उतारने के लिये उन्होंने देश भर में शिला पूजन तथा उन्हें अयोध्या मंगवाने की व्यवस्था की। देश भर में तीन लाख गांवों में राम शिलाएं पूजी गई, प्रति परिवार केवल सवा रुपये की राशि और प्रति गांव एक शिला देने की मांग रखी गई। देश की विशाल संत शक्ति इस अभियान से सक्रियता तथा उत्साहपूर्वक जुड़ी। लगभग 25 हजार शिला–यात्राएं अयोध्या आई। इस तरह एक सघन भावनात्मक आन्दोलन मोरोपंत जी ने खड़ा कर दिया। इस आन्दोलन को उभारने के लिये उन्होंने समय–समय पर शिला–पूजन के साथ शिलान्यास , चरण–पादुका, राम–जानकी यात्रा की पूरी रणनीति बनाई थी। राम–जानकी यात्रा के रथों में भगवान राम को कारावास के भीतर दिखाया गया था। यह अयोध्या में राम की स्थिति का जीवंत चित्र था। इन रथों ने हिन्दी पट्टी के राम उपासकों की सुप्त चेतना में विद्रोह का उफान भर दिया, उन्हें राम की खातिर कुछ भी कर गुजरने की मनः स्थिति से ओतप्रोत किया। 1984 की राम–जानकी यात्राएं अयोध्या आन्दोलन के लिये प्रस्थान बिन्दु सरीखी थीं।

सही अर्थों में मोरोपंत जी ने श्रीराम मंदिर निर्माण के स्वप्न को अयोध्या से निकालकर देश भर में फैला दिया। यही कारण है कि उन दिनों कुछ विश्लेषक उन्हें अयोध्या आन्दोलन का फील्ड मार्शल कहते थे।

भारतीय इतिहास पुनर्लेखन– आप्टे जी की रुचि भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन में थी और उन्होंने इतिहास में

बैठे : बाएं से बाबा साहब आपटे, पं.रामनारायण शास्त्री, स्वामी अमूर्तानंदजी, श्रीगुरुजी, श्रीबालासाहब देवरस, श्री माधवराव मूले।
खड़े : श्रीबापूराव मोघे, श्री रज्जू भैय्या, श्री एस.जी.सुब्रमण्यम्, श्रीएकनाथ जी रानडे, श्री ए दक्षिणामूर्ति, श्री यादवराव जोशी,श्री सु.ना.राव, श्री मोरोपंत पिंगले, श्री भाऊराव देवरस,श्री भाऊसाहब भुस्कुटे (6 फरवरी 1972, केन्द्रीय कार्यकारिणी मंडल बैठक,विवेकानन्दपुरम कन्याकुमारी)

हम इतिहास को सबसे प्रभावी संस्कार मानते हैं। अगर इतिहास लोगों में संस्कार नहीं पैदा कर सकता तो वह इतिहास नहीं है। इतिहास में केवल राजा महाराजाओं की वंशावली का वर्णन किये जाने से कोई संस्कार नहीं मिलेगा। जिन लोगों ने समाज के लिए कुछ नहीं किया, उनका नाम इतिहास में जोड़ने से क्या लाभ होगा? इतिहास में ऐसे लोगों को शामिल किया जाना चहिए, जिनके बारे में पढ़कर भावी पीढ़ी में गुण पैदा हों। केवल घटनाओं को सूचीबद्ध करने कोई लाभ नहीं होगा। –मोरोपंत पिंगले

सम्यक दृष्टि एवं सत्यापन के लिए बड़ा कार्य किया था। किन्तु उनके जीवन काल में उनके विचारों को मूर्तरूप नहीं दिया जा सका। इसलिए मोरोपंत जी ने ''बाबा साहब आप्टे स्मारक समिति' की स्थापना की और उसके तत्वावधान में अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना तैयार की। इस योजना के अन्तर्गत उन्होंने भारत के प्रत्येक जिले का इतिहास लिखने की कल्पना सामने रखी। उन्होंने भारतीय काल–बोध को ईसवी सन् से मुक्त करके कलि संवत से जोड़ने का भगीरथ प्रयास किया, भारतीय काल गणना पर अनेक शोधपरक ग्रंथ तैयार कराए। मालवा क्षेत्र में अपने प्रारंभिक प्रचारक जीवन के सहयोगी एवं प्रसिद्ध पुरातत्वविद श्री हरिभाउ वाकणकर तथा अन्य विद्वानों की टोली को साथ लेकर प्राचीन सरस्वती नदी के प्रवाह की खोज का कार्यक्रम बनाया और वे इस शोधपरक यात्रा में सम्मिलित रहे। इस शोध अभियान से यह सिद्ध हो गया कि सारस्वत सभ्यता की आधार सरस्वती नदी किन्हीं प्राकृतिक कारणों से विलुप्त हो गई थी। शोध में सरस्वती सभ्यता के प्राचीन अवशेष मिले। तदन्तर योजना में मोरोपंत जी के निर्देशन में सरस्वती को स्थापित किया और भारतीय इतिहास को एक नया आयाम दिया, जिससे कपोल कल्पित मानसिकता वाले इतिहास को ध्वस्त करने में सफलता मिली।

आप्टे स्मृति ग्रंथ के लिए उन्होंने सातवीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक विदेशी आक्रमणों और दासता के विरूद्ध भारतीय प्रतिरोध एवं जिजीविषा की कथा को विषय के रूप में चुना। इतिहास संकलन समिति के तत्वावधान में राष्ट्रीय इतिहासकारों ने इस प्रकल्प पर अथक परिश्रम किया और इस विषय पर पुरानी विद्वता द्वारा लिखित सैकड़ों लेखों और दस्तावेजों को इकट्ठा किया।

श्री मोरोपंत जी ने श्रीगुरुजी के निधन के पश्चात सात खंड़ों में ''श्रीगुरुजी समग्र'' का संयोजन कालक्रमानुसार किया।

संघर्षकाल में संगठनकर्ता – 1948 में गांधी हत्या के बहाने संघ पर प्रतिबंध लगा तब वे महाराष्ट्र में सह प्रांत प्रचारक थे। अपनी योजकता और संगठन कुशलता के बल पर स्वयं भूमिगत रहते हुए उन्होंने महाराष्ट्र से 11000 सत्याग्रहियों को जेल जाने की प्रेरणा दी। 1975 के आपातकाल में भी वे 19 महीने भूमिगत रहकर ही देशभर में संघ के संगठनतंत्र का सम्पर्क सूत्र बने रहे। वे आपातकाल के अंत तक पुलिस की गिरफ्त में नहीं आए तथा अनेक योजनाओं द्वारा आंदोलन को सशक्त बनाया। उस समय संघ के 6 अघोषित सरसंघचालकों में वे भी एक थे।

गोवंश संरक्षण – गोवंश रक्षा के क्षेत्र में उनकी सोच एकदम मौलिक थी। उनका मानना था कि गाय का अर्थ पूरे गोवंश (गाय,बैल, सांड, बछड़ा, बछिया) से है। अतः गाय की रक्षा किसान के घर में ही हो सकती है, गोशाला या पिंजरापोल में नहीं। देशी गाय का कूबड़ सूर्य से स्वर्ण ऊर्जा खींचता है, इसलिए उसका दूध हल्का पीला होता है। आयुर्वेद में दूध का अर्थ देसी गाय का दूध है। गोबर तथा गोमूत्र भी गोदुग्ध जैसे ही उपयोगी पदार्थ हैं। यदि किसान को इनका मूल्य मिलने लगे, तो फिर गोवंश को कोई नहीं बेचेगा। उनकी प्रेरणा से गोबर और गोमूत्र से साबुन, तेल, मंजन, कीटनाशक, फिनाइल, सैंपू, टाइल्स, मच्छर काइल, दवाएं आदि सैकड़ों प्रकर के निर्माण प्रारंभ हुए। गोबर तथा गोमूत्र से गोबर गैस प्लांट संचालित कर किसान के घर में बिजली के बल्ब जगमगा रहे हैं तथा खेतों में पम्पसेट चल रहे हैं। खेती में रासायनिक खादों तथा कीटनाशकों से भूमि की उर्वरा शक्ति निरन्तर कम तथा खाद्य सामग्री विषाक्त हो रही है। ऐसे में सभी तरफ आर्गेनिक उत्पादों की मांग बढ़ रही है। गोवंश के संरक्षण की आवश्यकता किसान तथा उपभोक्ताओं दोनों के लिए हितकर है।

अन्य – पारडी (गुजरात) के प्रख्यात वैदिक विद्वान पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर (1867–1968) के ''स्वाध्याय मंडल'' की पुर्नस्थापना में उनका बड़ा योगदान है। महाराष्ट्र के वनवासी क्षेत्र में उन्होंने विभिन्न सेवा कार्य जैसे देवबोध (ठाणे का सेवा प्रकल्प), कलावा स्थित कुष्ठ रोग निर्मूलन प्रकल्प इत्यादि प्रारंभ किये। श्री मोरोपंत जी '' साप्ताहिक विवेक'' (मुम्बई) की विस्तार योजना के जनक थे तथा नारायण हरि पालकर– स्मृति (रूग्णसेवा प्रकल्प, मुम्बई) की प्रेरणा उन्होंने दी थी। उन्होंने लघु उद्योग भारती की स्थापना कर देश के छोटे उद्योगों को एक प्लेटफार्म दिया।

मोरोपंत जी का मत था कि भूतकाल और भविष्य को जोड़ने वाला पुल वर्तमान है, अतः इस पर सर्वाधिक ध्यान देना चाहिए। उनके जीवन में निराशा और हताशा का कोई स्थान नहीं था। वे सदा हंसते और हंसाते रहते थे। अपने नवीन कार्यों से नई पीढ़ी को दिशा देने वाले आदर्श संगठनकर्ता, आत्मविलोपी मोरोपंत जी का 21 सितम्बर 2003 को नागपुर में देहान्त हुआ। ■

उत्तर : महापुरुष पहचानो- आर्यभट्ट

पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय भारत के सबसे तेजस्वी, तपस्वी एवं यशस्वी चिंतक रहे हैं। उनके चिन्तन के मूल में लोकमंगल ओर राष्ट्र का हित समाहित है। उन्होंने राष्ट्र को धर्म, अध्यात्म और संस्कृति का सनातन पुंज बताते हुए राजनीति की नई व्याख्या की। वह दलगत एवं सत्ता की राजनीति से ऊपर उठकर वास्तव में एक ऐसे राजनीतिक दर्शन को विकसित करना चाहते थे जो भारत की प्रकृति एवं परम्परा के अनुकूल हो और राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति करने में समर्थ हो। अपनी व्याख्या को उन्होंने ''एकात्म मानववाद'' का नाम दिया।

एकात्म मानववाद का तात्विक सार, संक्षेप में दीनदयाल जी के शब्दों में इस प्रकार हैः ''हमारी सम्पूर्ण व्यवस्था का केन्द्र 'मानव' होना चाहिये, जो यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे के न्याय के अनुसार समष्टि का जीवमान प्रतिनिधि एवं उसका उपकरण है। भौतिक उपकरण मानव के सुख साधन हैं, साध्य नहीं। जिस व्यवस्था में, भिन्न रुचि लोक का विचार केवल एक औसत मानव अथवा शरीर, मन, बुद्धि व आत्मायुक्त अनेक ऐषणाओं से प्रेरित पुरुषार्थ चातुष्ट्यशील पूर्ण मानव के स्थान पर एकांगी मानव का ही विचार किया जाये, वह अधूरी है। हमारा आधार एकात्म मानव है, जो एकात्म समष्टियों का एक साथ प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखता है। एकात्म मानववाद के आधार पर हमें जीवन की सभी व्यवस्थाओं का विकास करना होगा।''

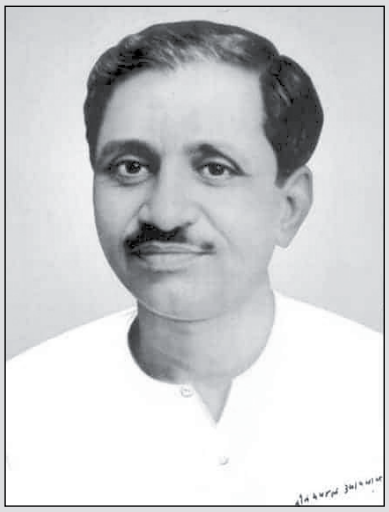

पं.दीनदयाल उपाध्याय
जन्म – 25 सितम्बर 1916
संघ प्रवेश – 1939
जीवनव्रती प्रचारक– 1942 से
महामंत्री भारतीय जनसंघ– 1952–67
अध्यक्ष,भारतीय जनसंघ–1967 से आजीवन
देहावसान – 11 फरवरी 1968

दीनदयाल जी मानते थे कि पश्चिम की यह बहस भी एक मानवीय बहस है, इसे हमें जानना चाहिये तथा इससे कुछ सीखना भी चाहिये, लेकिन हमें इन द्वंदमूलक निष्कर्षों का अनुयायी नहीं बनना चाहिये। पाश्चात्य राजनैतिक चिन्तन ने मानव को सेक्युलरवाद, व्यक्तिवाद (पूंजीवाद), समाजवाद एवं साम्यवाद की विचारधाराएं दी थी। स्वतंत्र भारत का नेतृत्व भी इन्हीं वादों में भारत का भविष्य खोज रहा था। दीनदयाल जी ने इस खोज में हस्तक्षेप करते हुए सवाल खड़ा किया कि जब हमने पाश्चात्य साम्राज्यवाद को नकार दिया, तब अब हमारी क्या मजबूरी है कि हम पाश्चात्य वादों का अनुगमन करें। अतः चिन्तन के आधार पर इसके मौलिक विकल्प के रूप में उन्होंने ''एकात्म मानववाद'' का प्रतिपादन किया।

यह विचार व्यक्ति बनाम समाज नहीं वरन् व्यक्ति और समाज की एकात्मता का विचार है। यह मानव बनाम प्रकृति नहीं वरन मानव के साथ प्रकृति की एकात्मता का विचार है। भौतिक बनाम आध्यात्मिक नहीं वरन इनकी एकात्मता का विचार है। भारत में इसे धर्म कहा गया है, यतो अभ्युदय निःश्रेयस संसिद्धि सः धर्मः। अर्थात यह व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि व परमेष्टि की एकात्मता का विचार है। एकात्मता, समग्रता में निहित रहती है। समग्रता के अभाव में खण्ड दृष्टि से मानव आक्रांत होता है। जैसे ब्रह्माण्ड की समग्रता है, वैसे ही व्यक्ति की भी समग्रता है। व्यक्ति अर्थात केवल शरीर नहीं, उसके पास मन हैं, बुद्धि है और आत्मा भी है। यदि इन चारों में से एक की भी उपेक्षा हो जाये, तो व्यक्ति का सुख विकलांग हो जायेगा। इन चारों के पृथक पृथक सुख से व्यक्ति सुखी नहीं होता, उसे तो एकात्म एवं घनीभूत सुख चाहिये, जिसे आनंद कहते हैं। यह मानवदर्शन, मानव जीवन एवं सम्पूर्ण सृष्टि के एकमात्र सम्बन्ध का दर्शन है। यह व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व तथा ब्रह्माण्ड को स्वयं में समाविष्ट करते हुए समन्वय का आधार प्रदान करता है। दीनदयाल जी ने एकात्मवाद के आधार पर एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना की, जिसमें विभिन्न राज्यों की संस्कृतियाँ विकसित हों और एक ऐसा मानव धर्म उत्पन्न हो जिसमें सभी धर्मों का समावेश हो, जिसमें व्यक्ति को समान अवसर और स्वतंत्रता प्राप्त हो; जो एक सुदढ़, सम्पन्न और जागरूक राष्ट्र कहलाये। वे जीवन सम्बंधी भारतीय मान्यताओं तथा आधुनिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के बीच समन्वय चाहते थे। आधुनिक युग की मांगों को धर्म के स्थान पर सनातन आदर्शों के आधार पर पूर्ण करना चाहते थे। उनकी यह समन्वय विचार प्रणाली एकात्म मानववाद का आधार थी।

अर्थ का अभाव ही नहीं अत्यधिक प्रभाव भी धर्म का नाश करता है। यह भारत का अपना विशेष दृष्टिकोण है। अर्थ जब अपने में या उसके द्वारा प्राप्त पदार्थों में और उनसे प्राप्त भोग–विलास में आसक्ति उत्पन्न कर देता है तब अर्थ का प्रभाव कहा जाता है। जिसे केवल पैसे की धुन लगी रहे, वह देश, धर्म, जीवन का सुख सब कुछ भूल जाता है। इसी प्रकार विषयासक्त मनुष्य पौरुष विहीन होकर स्वयं और समाज के नाश का कारण बनता है। प्रथम प्रकार के प्रभाव में अर्थ साधन न रह कर साध्य बन जाता है। →

जनसेवक पंडित बच्छराज व्यास

पहले संघ और फिर भारतीय जनसंघ के काम में अपना जीवन व्यतीत करने वाले पंडित बच्छराज व्यास का जन्म नागपुर में 24 सितम्बर, 1916 को हुआ था। उनके पिता श्री श्यामलाल मूलतः डीडवाना (राजस्थान) के निवासी थे, जो एक व्यापारिक फर्म में मुनीम होकर नागपुर आये थे।

बच्छराज जी एक मेधावी छात्र थे। बी.ए. (ऑनर्स) और फिर एल एल.बी. कर वे वकालत करने लगे। महाविद्यालय में पढ़ते समय वे अपने समवयस्क बालासाहब देवरस के सम्पर्क में आकर शाखा आने लगे। दोनों का निवास भी निकट ही था। बालासाहब के माध्यम से उनकी भेंट संघ के संस्थापक डा. हेडगेवार से हुई।

व्यक्ति पहचानने की कला में माहिर डाक्टरजी ने एक-दो बार की भेंट के बाद बालासाहब से कहा कि यह बड़े काम का आदमी है, इसे पास में रखना चाहिए। बालासाहब ने इस जिम्मेदारी को पूरी तरह निभाया।

बच्छराज जी के घर पर खानपान में छुआछूत का बहुत विचार होता था। पहली बार शिविर में आने पर डॉक्टर जी ने उन्हें अपना भोजन अलग बनाने की अनुमति दे दी। शिविर के बाद बच्छराज जी संघ के काम में खूब रम गये और उनके माध्यम से अनेक मारवाड़ी युवक स्वयंसेवक बने। अगली बार वे सब भी शिविर में आये और उन्होंने अपना भोजन अलग बनाया; पर तीसरे शिविर तक वे सब संघ के संस्कारों में ढलकर सामूहिक भोजन करने लगे। संघ में समरसता का विचार कैसे जड़ पकड़ता है, बच्छराज जी इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

धीरे-धीरे बच्छराज जी की वकालत अच्छी चलने लगी; पर इसके साथ ही

पंडित बच्छराज व्यास

शाखा की ओर भी उनका पूरा ध्यान रहता था। उनके प्रयास से मारवाड़ियों के साथ ही गुजराती, सिन्धी, उत्तर भारतीय तथा महाराष्ट्र से बाहर के मूल निवासी युवक बड़ी संख्या में शाखा आने लगे। श्रीगुरुजी का उन पर बहुत विश्वास था।

बच्छराज जी अपनी वकालत का काम सहयोगियों को देकर स्वयं कोलकाता, मुंबई, चेन्नई, सूरत, भाग्यनगर आदि बड़े नगरों में जाकर अपने परिचित मारवाड़ी व्यापारियों से संघ विचार से चलने वाले विविध संगठनों के लिए धन ले आते थे।

तृतीय वर्ष शिक्षित बच्छराज जी का विवाह छात्र जीवन में ही हो गया था। इसके बाद भी उनके जीवन में प्राथमिकता संघ कार्य को ही रहती थी। उन दिनों राजस्थान छोटी-छोटी रियासतों में बंटा था। संघ का काम वहां नगण्य होने के कारण दिल्ली से वसंतराव ओक के निर्देशन में चलता था।

ऐसे में श्री बालासाहब ने श्रीगुरु जी को सुझाव दिया कि बच्छराज को राजस्थान भेजा जाये। बच्छराज जी सहर्ष इस आज्ञा को शिरोधार्य कर वकालत और गृहस्थी छोड़कर राजस्थान चले आये। 1944 से 47 तक उन्होंने सतत प्रवास कर यहां संघ कार्य की नींव को मजबूत किया। यहां सब लोग उन्हें 'भैयाजी' कहते थे।

राजस्थान से लौटकर वे फिर से नागपुर में सक्रिय हो गये। 1948 के प्रतिबंध काल में नागपुर केन्द्र को संभालते हुए उन्होंने देश भर के सत्याग्रह को गति दी।

1965 में श्रीगुरुजी और बालासाहब के आदेश पर वे भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। 14 वर्ष तक वे स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से महाराष्ट्र विधान परिषद के सदस्य भी रहे। संघ जीवन के आदर्श उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में भी बनाये रखे। वे एक शिवभक्त थे और कवि भी, पर इन सबसे पहले वे स्वयंसेवक थे।

जनसेवा को ही अपना जीवनधर्म मानने वाले बच्छराज जी 15 मार्च, 1972 को देवलोकवासी हो गये। ■

→ द्वितीय में अर्थ धर्माचरण का साधन न होकर विषय-भोगों का साधन बन जाता है। विषय-तृष्णा की कोई मर्यादा न होने के कारण एक ओर तो ऐसे व्यक्ति के सम्मुख सदैव अर्थ का अभाव बना रहेगा, दूसरे पौरुष हानि से अर्थोपार्जन की क्षमता भी कम होती जायेगी। जब अर्थ ही समाज के प्रत्येक व्यवहार और व्यक्ति की प्रतिष्ठा का मापदण्ड बन जाये तब भी अर्थ का प्रभाव हो जाता है। जब समाज में सभी धनपरायण हो जायें तो प्रत्येक कार्य के लिये अधिकाधिक धन की आवश्यकता होगी। धन का यह प्रभाव प्रत्येक के जीवन में अर्थ का अभाव उत्पन्न कर देता है। इससे बचाव के लिये वे चारित्रिक शुचिता पर बल देते थे।

उनके विचार में परम वैभव की प्राप्ति समाज और राष्ट्र का मोक्ष है। राष्ट्र को परम वैभव प्राप्त कराने हेतु वे दो शर्तें आवश्यक मानते थे। पहली यह कि वैभव हमारे अपने पुरुषार्थ से प्राप्त होना चाहिये। इसके लिये सम्पूर्ण राष्ट्र की संगठित कार्यशक्ति होना जरूरी है। दूसरी शर्त है, संगठित कार्यशक्ति के द्वारा वैभव प्राप्त करने की। यह सफलता धर्म का संरक्षण करते हुए होनी चाहिये। ■

संघ समर्पित माधवराव मुले

7 नवम्बर, 1912 (कार्तिक कृष्ण 13, धनतेरस) को ग्राम ओझरखोल (जिला रत्नागिरी, महाराष्ट्र) में जन्मे माधवराव कोण्डोपन्त मुले प्राथमिक शिक्षा पूरी कर आगे पढ़ने के लिए 1923 में बड़ी बहन के पास नागपुर आ गये थे।

यहाँ उनका सम्पर्क संघ के संस्थापक डा. हेडगेवार से हुआ। मैट्रिक के बाद इन्होंने डिग्री कालिज में प्रवेश लिया; पर क्रान्तिकारियों से प्रभावित होकर पढ़ाई छोड़ दी। इसी बीच पिताजी का देहान्त होने से घर चलाने की पूरी जिम्मेदारी इन पर आ गयी। अतः इन्होंने टायर ट्यूब मरम्मत का काम सीखकर चिपलूण में यह कार्य किया; पर घाटा होने से उसे बन्द करना पड़ा।

इस बीच डा. हेडगेवार से परामर्श करने ये नागपुर आये। डाक्टर जी इन्हें अपने साथ प्रवास पर ले गये। इस प्रवास के दौरान डाक्टर जी के विचारों ने माधवराव के जीवन की दिशा बदल दी। चिपलूण आकर माधवराव ने दुकान किराये पर उठा दी और स्वयं पूरा समय संघ कार्य में लगाने लगे।

1937 में निजाम हैदराबाद के विरुद्ध हुए सत्याग्रह तथा 1938 में पुणे में सोना मारुति सत्याग्रह के दौरान वे जेल भी गये। 1939 में माधवराव जी प्रचारक बने। 1940 में उन्हें पंजाब भेजा गया।

विभाजन की चर्चाओं के कारण वहाँ का वातावरण उन दिनों बहुत गरम था। ऐसे में हिन्दुओं में हिम्मत बनाये रखने तथा हर स्थिति की तैयारी रखने का कार्य उन्होंने किया।

गाँव और नगरों में शाखाओं का जाल बिछ गया। माधवराव ने सरसंघचालक श्री गुरुजी का प्रवास सुदूर क्षेत्रों में कराया। इससे हिन्दुओं का मनोबल बढ़ा और वे हर

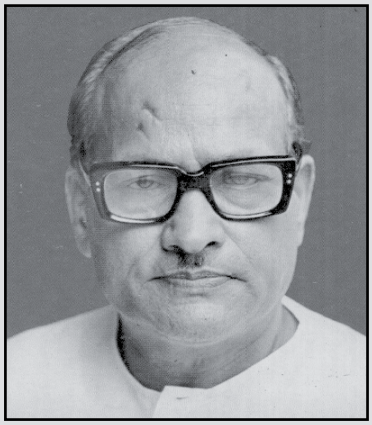

माधवराव मुले

स्थिति से निबटने की तैयारी करने लगे।

मुस्लिम षड्यन्त्रों की जानकारी लेने के लिए अनेक स्वयंसेवक मुस्लिम वेष में मस्जिदों और मुस्लिम लीग की बैठकों में जाने लगे। शस्त्र संग्रह एवं प्रशिक्षण का कार्य भी बहुत प्रभावी ढंग से हुआ। इससे विभाजन के बाद बड़ी संख्या में हिन्दू अपने प्राण बचाकर आ सके। आगे चलकर भारत में इनके पुनर्वास में भी माधवराव जी की भूमिका अति महत्त्वपूर्ण रही। देश के स्वतन्त्र होते ही धूर्त पाकिस्तान ने कश्मीर पर हमला कर दिया। माधवराव जी के निर्देश पर स्वयंसेवकों ने भारतीय सैनिकों के कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य किया। श्रीनगर हवाई अड्डे को स्वयंसेवकों ने ही दिन रात एक कर ठीक किया। इसी से वहाँ बड़े वायुयानों द्वारा सेना उतर सकी। अन्यथा आज पूरा कश्मीर पाकिस्तान के कब्जे में होता।

1959 में उन्हें क्षेत्र प्रचारक, 1970 में सहसरकार्यवाह तथा 1973 में सरकार्यवाह बनाया गया। 1975 में इन्दिरा गान्धी ने देश में आपातकाल थोपकर संघ पर प्रतिबन्ध लगा दिया। सरसंघचालक श्री बालासाहब देवरस जेल चले गये।

ऐसे में लोकतन्त्र की रक्षार्थ हुए सत्याग्रह का संचालन माधवराव जी ने किया। एक लाख स्वयंसेवक जेल गये। इनके परिवारों को कोई कष्ट न हो, इस बात पर माधवराव का जोर बहुत रहता था। 1977 के लोकसभा चुनाव में इन्दिरा गान्धी पराजित हुई। संघ से भी प्रतिबन्ध हट गया।

यद्यपि माधवराव जी कभी विदेश नहीं गये; पर उन्होंने विदेशस्थ स्वयंसेवकों से सम्पर्क का तन्त्र विकसित किया। आज विश्व के 200 से भी अधिक देशों में संघ कार्य चल रहा है। इस भागदौड़ से उनका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया और प्रवास करने में कठिनाई होने लगी। यह देखकर 1978 में रज्जू भैया को सरकार्यवाह की जिम्मेदारी दी गई।

मुम्बई में माधवराव जी की चिकित्सा प्रारम्भ हुई; पर हालत में सुधार नहीं हुआ। 30 सितम्बर 1978 को अस्पताल में ही उनका देहान्त हो गया। ■

'सेवा पथ' स्मारिका का विमोचन

जब भी राष्ट्र पर संकट आया है, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता सहायता कार्य में सबसे पहले पहुंचते हैं।

कोरोना की विकट परिस्थितियों में संघ के स्वयंसेवकों ने घुमंतु, अर्द्धघुमंतु और विमुक्त परिवारों की सार सम्हाल कर भोजन, राशन किट, मास्क, साबुन, आयुर्वेदिक काढ़ा आदि उन तक पहुंचाया। स्वयंसेवकों ने अपनेपन के भाव से यह कार्य किया, ताकि उन्हें लगे कि वे वृहत्तर हिन्दू परिवार के सदस्य हैं तथा मुसीबत के समय परिवार उनके साथ है। स्वयंसेवकों द्वारा राजस्थान के घुमंतु परिवारों के बीच किए गए कार्य का जिलाश: संक्षिप्त विवरण एक स्मारिका 'सेवा पथ' के रूप में प्रकाशित किया गया है।

उ.प.क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम, जिला संघचालक श्री सीताराम, जिला कार्यवाह श्री कैलाश मीणा द्वारा 'सेवा पथ' का विमोचन प्रतापगढ़ संघ कार्यालय श्रीरामवाटिका में किया गया ।

कुछ अलग थे प्रणब मुखर्जी

भारत के 13 वें राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी नहीं रहे। उन्होंने गत 31 अगस्त को अन्तिम सांस ली। प्रणब मुखर्जी कई बातों के लिये हमेशा याद किये जायेंगे। अक्सर राष्ट्रपति या राज्यपाल अपने पूर्व राजनैतिक दल की विचारधारा से जुड़े रहते हैं, जबकि उनसे अपेक्षा की जाती है कि राष्ट्रपति या राज्यपाल जैसे पद पर आसीन होने के बाद वे सभी दलों और सभी विचारधाराओं तथा उनके मानने वालों से समान व्यवहार करें। प्रणब मुखर्जी कांग्रेसी थे, परन्तु राष्ट्रपति बनने के बाद वे सर्वसम्मति और सर्वसमावेसी नीति के पोषक बने रहे। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन जी भागवत को कई बार राष्ट्रपति भवन में भोजन पर आमंत्रित कर राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा की। सभी दलों के नेताओं से उनके अच्छे संबंध थे।

प्रणब मुखर्जी कांग्रेस की ओर से राष्ट्रपति पद के लिये उम्मीदवार थे। उनके कार्यकाल में ही कांग्रेस केन्द्रीय सत्ता से च्युत हुई तथा बीजेपी के नरेन्द्र भाई मोदी प्रधानमंत्री बने। परन्तु, मोदीजी और प्रणब दा में गजब का तालमेल रहा। इसे दोनों ने ही सार्वजनिक रूप से प्रकट भी किया। प्रणब मुखर्जी जिन्हें लोग 'प्रणब दा' कहकर बुलाते थे, ने एक कार्यक्रम में कहा कि वे भाजपा के दो नेताओं सर्वश्री अटल बिहारी वाजपेयी और नरेन्द्र मोदी से काफी प्रभावित थे। उन्होंने कहा कि नरेन्द्र मोदी चीजों को बहुत अच्छी तरह ऑब्जर्व करते हैं तथा वे सबसे तेजी से सीखने वाले प्रधानमंत्री हैं। मोदी जी ने भी प्रणब दा के लिये कहा था कि राष्ट्रपति मुखर्जी ने एक अभिभावक की तरह मुझे उंगली पकडकर चीजें सिखाई। मैनें उनके साथ सीखा कि कैसे अलग-अलग राजनीतिक विचारधारा होने के बावजूद लोकतंत्र में एक दूसरे के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया जा सकता है। कई अवसरों पर प्रणब दा ने मोदी सरकार की प्रशंसा भी की।

प्रणब दा अद्भुत स्मृति के धनी थे। वे इसका श्रेय अपनी मां को देते थे। बचपन में प्रणब दा एक शरारती लड़के थे और अक्सर अपनी स्कूल से गोता लगा लिया करते थे। इसलिये उनकी मां ने कहा कि प्रणब को खाना तभी मिलेगा जब वह दिन भर स्कूल में क्या पढ़ाया-यह प्रत्येक पीरियड के अनुसार बता देगा। प्रतिदिन ही ऐसा होने लगा। इस प्रक्रिया ने प्रणब दा की याद्दास्त तीव्र कर दी। प्रणव मुखर्जी प्रायः अपने ब्रीफ़केस में भारतीय संविधान की दो प्रतियाँ रखते थे। राष्ट्रपति को संविधान और कानून का रखवाला माना जाता है।

न्यूयार्क से प्रकाशित होने वाले जर्नल 'यूरो मनी' द्वारा आयोजित सर्वेक्षण में उन्हें वर्ष 1984 में विश्व के सर्वोत्तम पांच वित्त मंत्रियों में सम्मिलित किया था। सन् 1997 में उन्हें 'सर्वोत्तम सांसद' तथा 2011 में 'भारत का सर्वोत्तम प्रशासक' का पुरस्कार दिया गया। सन् 2019 में देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से उन्हें नवाजा गया।

राष्ट्रपति पद का कार्यकाल पूर्ण होने के पश्चात् उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा अपने 'स्थापना दिवस' पर नागपुर मे आयोजित कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था। अनेक कांग्रेसी नेताओं ने संघ के कार्यक्रम में न जाने का सुझाव उन्हें दिया। स्वयं उनकी बेटी ने भी ऐसी ही अपील की थी। परन्तु प्रणब दा संघ के कार्यक्रम में गये। उन्होंने स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहा कि आप लोग अनुशासित और ट्रेंड हैं, और यह भी कि वे देश, राष्ट्रवाद और देशभक्ति पर बात करने आये हैं।

प्रणब दा को पाथेय कण परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि। ■

जन्म दिवस पर शत-शत नमन

ज्योतिर्मठ उपपीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य पदमभूषण
सत्यमित्रानंद गिरि
19 सितम्बर

(1932-2019)

विदेश में भारत का प्रथम तिरंगा राष्ट्रध्वज फहराने वाली
मैडम भीकाजी कामा
24 सितम्बर

(1861-1936)

आध्यात्मिक गुरु व सबको गले लगाने वाली
माता अमृतानंदमयी
27 सितम्बर

(1953)

भारत रत्न से सम्मानित लोकप्रिय गायिका
लता मंगेशकर
28 सितम्बर

(1929)

असहाय की सहायता- प्रथम वरीयता

एक फटे- हाल महिला घायल-अवस्था में सड़क के किनारे पड़ी हुई कराह रही थी। पास में उसका अबोध शिशु लेटा था। वह भूख के मारे रो रहा था। महिला में इतनी शक्ति भी नहीं थी कि वह अपने शिशु को गोद में लेकर सम्हाल सके।

अनेक लोग उस मार्ग से आ-जा रहे थे। वे क्षणभर को रुकते, महिला की स्थिति देखकर अपनी प्रतिक्रिया देते और चल देते। लगभग सभी की यही राय थी कि पता नहीं यह कौन है। यदि इसकी मदद करने गये तो पुलिस को जवाब देना पड़ेगा।

अचानक वहाँ से एक बग्घी गुजरी। उस महिला की कराह सुनते ही बग्घी रुकी और उसमें से एक व्यक्ति नीचे उतरा। उसने बिना कुछ कहे-सुने उस महिला तथा उसके शिशु को उठाया और बग्घी में बैठा दिया और अपने कोचवान को बोला कि 'बग्घी अस्पताल ले चलो।'

कोचवान ने कहा -'लेकिन साहब! आपको जलसे में जाना है, वहाँ सभी आपका इंतजार करते होंगे।'

वह व्यक्ति बोला- 'मेरे लिये मानव-सेवा जलसे से बड़ी है।'

कोचवान फिर कुछ नहीं बोला, बग्घी सीधे अस्पताल की ओर मोड़ दी। अस्पताल में महिला को यथोचित उपचार दिया गया। जब महिला पूरी तरह चैतन्य हुई तो उस व्यक्ति ने महिला को कुछ रुपये दिये और वापस आकर कोचवान से कहा-'अब जलसे में चलो।'

ये व्यक्ति थे- पण्डित मदनमोहन मालवीय।

सार यह है कि किसी असहाय की सहायता को अपने अन्य सभी कार्यों से अधिक वरीयता देना चाहिये। यह एक नैतिक सामाजिकता है, जो एक सुन्दर मानवीय समाज की रचना करती है।

बाल प्रश्नोत्तरी

बाल मित्रों! यह प्रश्नोत्तरी पाथेय कण के 1 अगस्त के अंक पर आधारित है। उक्त अंक को आप पढ़ेंगे तो नीचे दिये गये सभी प्रश्नों के उत्तर बड़ी सरलता से दे सकेंगे।

1. विजय नगर साम्राज्य के सबसे कीर्तिवान राजा कौन थे?
(क) कृष्णदेव राय (ख) विक्रमादित्य (ग) चन्द्रगुप्त मौर्य (घ) सम्राट अशोक

2. बाजीराव बल्लाल के अतिरिक्त द्वितीय अजेय योद्धा जिसने अपने शासनकाल के सभी 14 युद्ध जीते?
(क) विक्रमादित्य (ख) चन्द्रगुप्त मौर्य (ग) सम्राट अशोक (घ) कृष्ण देवराय

3. बीजापुर सल्तनत को किस युद्ध में विजय नगर साम्राज्य से मुँह की खानी पड़ी?
(क) शिव-समुद्रम (ख) रायचूर (ग) दीवानी (घ) कोण्डविड

4. विजय नगर साम्राज्य ने बहमनी सुल्तानों की संयुक्त सेना को किस युद्ध में पराजित किया?
(क) रायचूर (ख) शिव समुद्रय (ग)कोण्डविड (घ) दीवानी

5. विजय नगर साम्राज्य के प्रमुख सलाहकार कौन थे?
(क) तेनालीराम (ख) तिरुमल राय (ग) आचार्य चाणक्य (घ) नरसा नायक

6. विजय नगर साम्राज्य में सिंचाई के लिये किस नदी पर बांध बनाया गया था?
(क) कावेरी (ख) तुंगभद्रा (ग) कृष्णा (घ) चन्द्रभागा

7. मनोज चौहान को 2006 में ''राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार'' किस बचाव कार्य के लिये दिया गया?
(क) आग (ख)भूकम्प (ग) बाढ़ (घ) आतंकी हमला

8. महर्षि अरविन्द ने अपना आश्रम कहाँ स्थापित किया था?
(क) दिल्ली (ख) मुम्बई (ग) कोलकता (घ) पुदुचेरी

9. श्री गुरूजी के भाषणों को 'बंच ऑफ थाट्स' के रूप में किसने संकलित किया है?
(क) हो. वे. शेषाद्रि (ख) यादवराव जोशी (ग) दत्तोपंथ ठेंगड़ी (घ) मधुकर राव भागवत

10. नरेन्द्र मोदी ने अपनी पुस्तक में संगठन शास्त्र का जीवंत विद्यापीठ तथा पारसमणि उपाधि किसे दी है?
(क) हो. वे. शेषाद्रि (ख) यादवराव जोशी (ग) दत्तोपंत ठेंगड़ी (घ) मधुकर राव भागवत

(उत्तर इसी अंक में हैं)

पहचानो तो यह महापुरुष कौन है ?

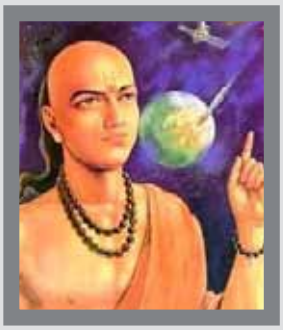

बाल मित्रों! यहाँ एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र को पहचानो और अपने ज्ञान की परीक्षा करो।

- आप महान खगोलशास्त्री एवं गणितज्ञ थे।
- आपने शून्य की खोज की।
- आपने 1500 वर्ष पहले यह खोज की कि पृथ्वी गोल है, पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है और उसकी परिधि 24,835 मील है।

(उत्तर इसी अंक में हैं)

वासुदेवः सर्वम्

महासर्ग के आदि में एक भगवान ही अनेक रूपों में हो जाते हैं– 'तदैक्षत बहु स्यां प्रजायेयेति' और अंत में अर्थात महाप्रलय में एक भगवान ही शेष रह जाते हैं– 'शिष्यते शेषसंज्ञः'। इस प्रकार जब आदि और अंत में एक भगवान ही रहते हैं, तब बीच में दूसरा कहाँ से आया? क्योंकि संसार की रचना करने में भगवान के पास अपने सिवाय कोई सामग्री नहीं थी, वे तो स्वयं संसार के रूप में प्रकट हुए हैं। इसलिए यह सब वासुदेव ही हैं।

जो चीज आदि और अंत में होती है, वही चीज मध्य में भी होती है। जैसे, सोने के गहने शुरु में सोना थे और अंत में सोना रहेंगे तो गहनों में दूसरी चीज कहाँ से आएगी? केवल सोना–ही–सोना है। इसी तरह सृष्टि के पहले भगवान थे और अंत में भगवान ही रहेंगे; तो बीच में भगवान के सिवाय क्या है? केवल भगवान–ही–भगवान हैं। जैसे सोने को चाहे गहनों के रूप में देखें, चाहे पासे के रूप में देखें, चाहे वर्क के रूप में देखें, है वह सोना ही। ऐसे ही संसार में अनेक रूपों में, अनेक आकृतियों में एक भगवान ही है।

जब तक मनुष्य की दृष्टि गहनों की तरफ, उसकी आकृतियों की तरफ रहती है, उसी को महत्त्व देती है, तब तक 'यह सोना ही है' इस तरफ उसकी दृष्टि नहीं जाती। ऐसे ही जब तक मनुष्य की दृष्टि संसार की तरफ रहती है, उसी को महत्त्व देती है, तब तक 'सब कुछ भगवान ही है' इस तरफ उसकी दृष्टि नहीं जाती। परंतु जब गहनों की तरफ दृष्टि नहीं रहती, तब गहनों में सोने की भावना नहीं होती, प्रत्युत 'यह सोना ही है' ऐसी भावना होती है।

ऐसे ही जब संसार की तरफ दृष्टि नहीं रहती, तब संसार में भगवान की भावना नहीं होती, प्रत्युत 'सब कुछ भगवान ही हैं, भगवान के सिवाय दूसरा कुछ है ही नहीं' ऐसी भावना होती है। कारण कि संसार में भगवान की भावना करने से संसार की सत्ता साथ में रहती है अर्थात संसार की भावना रखते हुए उसकी सत्ता मानते हुए, उसमें भगवान की भावना करते हैं। अतः जब तक संसार की सत्ता मानते हैं, संसार को महत्त्व देते हैं, तब तक संसार में भगवान की भावना करते रहने पर भी 'वासुदेवः सर्वम' का अनुभव नहीं होता।

'वासुदेवः सर्वम'– यह अवस्था नहीं है, प्रत्युत वास्तविक तत्त्व है। इसमें कभी परिवर्तन नहीं होता। यह जो कुछ संसार दिखता है, सब भगवान का ही स्वरूप है। भगवान के सिवाय इस संसार की स्वतंत्र सत्ता थी नहीं, है नहीं और कभी होगी भी नहीं। अतः देखने, सुनने और समझने में जो कुछ संसार आता है, वह सब–का–सब भगवत्स्वरूप ही है, वासुदेव का विराट स्वरूप है। भगवान की आज्ञा है–

मनसा वचसा दृष्ट्या गृह्यतेऽन्यैरपीन्द्रियैः ।
अहमेव न मत्तोऽन्यदिति बुध्यध्वमञ्जसा ।।

'मन से, वाणी से, दृष्टि से तथा अन्य इंद्रियों से भी जो कुछ ग्रहण किया जाता है, वह सब मैं ही हूँ। मुझसे भिन्न और कुछ नहीं है। ■

जन्म शताब्दी वर्ष (१९२०–२०२०) पर विशेष

अलौकिक व्यक्तित्व

श्री दत्तोपंत जी ठेंगड़ी जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत दिये जा रहे प्रसंगों की श्रृंखला में इस बार प्रस्तुत है प्रमिलाताई मेढ़े, सह संचालिका, राष्ट्र सेविका समिति, नागपुर का अनुभव कथन –

देश के जाने माने सोशलिस्ट मजदूर नेता श्री मकबूल साहब जब भी दिल्ली जाते,बिना श्री ठेंगड़ी जी से मिले, वापस कानपुर न आते। वे कहते, 'ऐसा आला इन्सान, काबलियत में जिसका कोई सानी नहीं, अपनेपन में तो मुझे खरीद लिया है'।

डॉ. लोहिया के निर्देश पर बस्ती जिले में केरल से आयी हुयी दोनों अम्माल बहनों का गोरखपुर जाते समय स्टेशन पर श्री दत्तोपंत से परिचय हुआ। इस समय दोनों कांग्रेस (आई) की विधायिका हैं। लेकिन वे आज 15 वर्षों से भाई बहन का रिश्ता निभाती चली आ रही हैं। केवल हालचाल ही नहीं, सौगात भी भेजती हैं।

साउथ एवेन्यू के टैक्सीवाले तो आज इतने वर्षों बाद जब श्री ठेंगड़ी जी संसद सदस्य 1976 से ही नहीं है, तो भी उनके नाम पर कहीं पर भी जाने के लिये हर समय तैयार रहते हैं।

कैन्टीन वाले 'हरी' का तो क्या कहना? दस भोजन करो, 20 खाओ, श्री ठेगड़ी जी के नाम पर बन्द मुठ्ठी ही वह तिजोरी में डालेगा। हमारे जैसे लोगों के लिये तो वह मुसीबत बना है– अधिक देने के लिये पैसे नहीं, कम पैसा देने का संस्कार नहीं तथा हरी बताने के लिये तैयार नहीं।

साउथ एवेन्यू के बशीर नाई की दुकान पर उत्तर प्रदेश के सोशलिस्ट पार्टी के संसद सदस्य चौधरी साहब (अब दिवंगत हो चुके हैं) दाढ़ी बनवाने जाते हैं, वहाँ उसकी दुकान में जहाँ मस्जिद आदि के चित्र टंगे हैं, वहीं श्री ठेंगड़ी जी का फोटो टंगा देखकर वे आग बबूला हो उठते हैं और कहते हैं कि ''जानते हो, ये कौन हैं? आर.एस.एस. वाले हैं, तुम लोगों ..... हैं!'' वह नाई उनकी दाढ़ी बनाने से सदैव के लिये इन्कार कर देता है, और कहता है कि ''आपने हमारे..... को गाली दी है, मै माफ नहीं कर सकता।''

आज वे गरीबों व मजदूरों के सच्चे हमदर्द के साथ–साथ केवल देश के ही नहीं, अपितु विदेश में भी प्रमुख अर्थशास्त्री तथा मजदूर आन्दोलन के एक विशेषज्ञ के रूप में जाने जाते हैं। मानव की शक्ति, क्षमताओं की विदित सीमाओं से भी आगे जा कर वे आश्चर्यजनक रूप से शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक गतिविधियों में अहर्निश तल्लीन रहते थे। ■

''राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020''

शिक्षा में 'पूरब' का चिंतन

विश्व में ज्ञान की दृष्टि से भारत का विशिष्ट स्थान रहा है। प्राचीन समय में तक्षशिला एवं नालंदा में समस्त विश्व के लोग ज्ञानार्जन के लिये भारत आते थे। शिक्षा के ये केन्द्र आध्यात्मिक ज्ञान के साथ-साथ विज्ञान, चिकित्सा, वास्तु, जीवन जीने की कला आदि क्षेत्रों में सबसे आगे थे। बीच के कालखण्ड में देश गुलाम रहा। हमारे विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों व ज्ञान के भण्डार नष्ट कर दिये गए। योजना से गुलामी की मानसिकता वाली शिक्षा दी जाने लगी। मैकाले की शिक्षा इसी ओर इंगित करती है।

आजादी के बाद शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन अवश्य हुआ परन्तु मैकाले की शिक्षा से देश को मुक्ति नहीं मिल सकी। इस हेतु समय-समय पर कई आयोग बने और कुछ सुझाव लागू भी हुए पर मूलरूप से ज्यादा परिवर्तन नहीं हो सका। छात्र पाठ्यक्रम कंठस्थ कर डिग्री प्राप्त करने की होड़ में उलझा रहा और डिग्री प्राप्त कर नौकरी प्राप्त करने में जुटा रहा।

वर्तमान 21वीं शताब्दी में नई-नई चुनौतियां सामने आने लगी। उसके अनुरूप नई पीढी को तैयार करने की आवश्यकता महसूस हुई। तदनुरूप शिक्षा नीति में परिवर्तन हेतु आयोग बने। देशभर से प्राप्त सुझावों के अनुरूप नई शिक्षा नीति 2020 घोषित की गई जिससे न केवल युवा शिक्षित होगा बल्कि रोजगार प्राप्त करने के साथ साथ संस्कारित होकर अपने पांवों पर खडा हो सकेगा। इस नीति से भारत आत्मनिर्भर बनने के साथ साथ विश्व को ज्ञान के क्षेत्र में नई दिशा भी देगा।

इसके लिए इस नीति में बच्चे की प्रारंभिक शिक्षा व माध्यमिक शिक्षा के साथ-साथ उच्च शिक्षा व तकनीकी शिक्षा पर भी जोर दिया गया है। बालक ''क्या सोचे'' के स्थान पर ''कैसे सोचे'' पर जोर दिया गया है ताकि उसमें अन्तर्निहित प्रतिभा निखर कर आगे आ सके। वह नौकरी के लिए चक्कर लगाने के स्थान पर नौकरी का सृजन करने वाला बने। वर्तमान में छात्र सूचना एवं सामग्री तो कम्प्यूटर या इन्टरनेट से डाउनलोड कर प्राप्त कर सकता है परन्तु उसकी जिज्ञासा, विश्लेषण व अनुसंधान की प्रवृति जाग्रत करने की व्यवस्था भी इस नीति में की गई है।

प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त कर अपने परिवेश से जुड़ते हुए बालक को कक्षा-06 से ही व्यावसायिक शिक्षा से जोड़ा गया है जिसमें विद्यार्थी जहाँ परम्परागत उद्योगों एवं आधुनिकतम आई. टी. एवं अन्य व्यवसायों के साथ जुड़ सकेगा। इस आयु वर्ग के बच्चों में रचनात्मकता, जिज्ञासा एवं प्रतिबद्धता का भाव होता है जो इस नीति से उभरकर नई-नई चीजों को मूर्तिरूप दे सकेगा।

इस नीति में बच्चों को विज्ञान, वाणिज्य एवं कला वर्गों में न बांधते हुए अपनी सोच, योग्यता एवं आवश्यकता के अनुसार कोई भी विषय लेने के लिए स्वतंत्र रखा गया है। वह भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र के साथ साथ संगीत भी ले सकेगा। प्रत्येक विषय के क्रेडिट अंक निर्धारित होंगे जो सदैव उसके खाते में जमा रहेंगे उस हेतु क्रेडिट बैंक की भी व्यवस्था की गई है। इस हेतु बालक को किसी भी समय प्रवेश एवं निकास की छूट दी गई है। स्नातक स्तर के 4 वर्षीय पाठ्यक्रम में परिस्थितिवश किसी समय निकास करने पर पूर्व में प्राप्त की गई शिक्षा व्यर्थ नहीं जाएगी। एक वर्ष की शिक्षा पर प्रमाणपत्र, दो वर्ष पर डिप्लोमा, तीसरे वर्ष पर स्नातक एवं चार वर्षीय शिक्षा पूर्ण करने पर अनुसंधान सहित स्नातक की डिग्री देने का विलक्षण प्रावधान है जिसमें बालक द्वारा प्राप्त की गई शिक्षा सदैव उसके साथ बनी रहेगी एवं उसका उपयोग समय आने पर आगे दुबारा किसी भी स्तर पर प्रवेश लेने में कर सकेगा।

इस नीति में शिक्षा की उपलब्धता तथा गुणवत्ता दोनों पर जोर दिया गया है। वर्तमान में छात्र प्रारंभिक शिक्षा में 95 प्रतिशत तक, उच्च प्राथमिक में 79 प्रतिशत एवं माध्यमिक शिक्षा में 56 प्रतिशत तक पहुंच पाते हैं। उच्च शिक्षा केवल 26.4 प्रतिशत ही छात्र ले पा रहे हैं। इस हेतु वर्ष 2030 तक स्कूल शिक्षा में शत प्रतिशत सकल नामांकन का लक्ष्य रखा गया है। इस हेतु परिवहन एवं छात्रावास सुवधिाएं भी दी जाएगी ताकि हर बच्चे को समान व समावेशी शिक्षा मिले। इस प्रकार की व्यवस्था राजस्थान में गत सरकार के समय की गई थी। कक्षा 1 से 8 तक के सभी बच्चों को तथा कक्षा 9 से कक्षा 12 तक की छात्राओं को ट्रांसपोर्ट वाउचर उपलब्ध कराये गए थे जिससे विद्यालयों में नामांकन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी।

इस नीति में उच्च शिक्षा को 50 प्रतिशत तक ले जाने का लक्ष्य रखा गया है। इससे देश में 3.50 करोड़ अतिरिक्त सीटें उपलब्ध होंगी जिससे हर प्रकार की रुचि रखने वाला छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकेगा। वर्तमान में उच्च शिक्षा में अलग-अलग नियामक संस्थाएं बनी हुई हैं जिन्हें मिलाकर एक ही नियामक आयोग (One Regulatory authority) बनाया गया है जो मानक निर्धारण, वित्त पोषण, मान्यता व विनियमन के स्वतंत्र निकाय के रूप में काम करेगा।

इस नीति में वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप ऑनलाईन

शिक्षा, ई–पाठ्यक्रम, वर्चुअल लैब आदि का प्रावधान किया गया है पर इसकी व्यवस्था हेतु शिक्षा में जीडीपी का 3.4 प्रतिशत से बढाकर 6 प्रतिशत व्यय करने का निर्णय किया गया है। यह सरकार की इस नीति को लागू करने में इच्छा शक्ति व प्रतिबद्धता प्रदर्शित करती है।

इस नीति में मूलरूप से अनुसंधान पर जोर दिया गया है। विश्व के सभी विकसित देशों में रिसर्च व डवलपमेंट विभाग अलग से ही कार्य करते हैं। इस हेतु इसके अन्तर्गत नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एनआरएफ) की स्थापना की गई है। इस हेतु एक दशक तक प्रतिवर्ष 20,000 (बीस हजार) करोड का प्रावधान रखा गया है। इसमें चार भाग रखे गए हैं विज्ञान, प्रोद्योगिकी, सामाजिक विज्ञान, कला व मानविकी, जिसमें सारे क्षेत्र कवर हो जाते हैं। उसमें शोधकर्ता के शोध से देश औद्योगिक व सैन्य संसाधन बनाने में अग्रणी बनेगा व हम आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होंगे।

इन लक्ष्यों की पूर्ति हेतु जहाँ आधारभूत ढांचा मजबूत करना होगा, साथ ही अच्छे योग्य अध्यापक भी तैयार करने होंगे। इस हेतु पहली बार शिक्षा में अध्यापन में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों को 12वीं के बाद ही 4 वर्षीय पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना होगा जो उस अनुरूप अपने आप को तैयार कर नई पीढी को वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करने में सहयोग प्रदान करेंगे।

इस तरह यह नीति पूरी तरह विद्यार्थी केन्द्रित बनायी गई है जिसमें छात्र भारतीय मूल की सोच के साथ वर्तमान चुनौतियों व आवश्यकताओं का सामना करने योग्य बन सकेगा। इसमें पर्याप्त लचीलापन, रचनात्मकता, नैतिकता, संस्कृति संरक्षण, मूल्यपरकता, सतत मूल्यांकन, गुणवत्ता व अनुसंधान का समावेश किया गया है। भारतीय जनमानस की भावनाओं, आकांक्षाओं व अपेक्षाओं की पूर्ति करते हुए युवा पीढ़ी को अतीत से आधुनिकता की ओर ले जाया गया है।

यह नीति कई मायनों में अद्वितीय है। इसमें नये भारत के निर्माण की नींव रखी गई है। भारत के युवाओं की प्रतिभा व क्षमताओं का लोहा विश्व स्वीकार करता है। अब इन युवाओं को पलायन नहीं करना पड़ेगा। यहाँ पर उन्हें अनुसंधान व खोज के पर्याप्त अवसर मिलेंगे व देश हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सकेगा। प्रधानमंत्री मोदी जी का सपना जिसमें भारत ज्ञानशक्ति में विश्व का नेतृत्व करते हुए सिरमोर बने हम साकार कर सकेंगे।

– वासुदेव देवनानी, पूर्व शिक्षा मंत्री राजस्थान

उत्तर : बाल प्रश्नोत्तरी - 1.(क) 2.(घ) 3.(ख) 4.(घ) 5.(क) 6.(ख) 7.(ग) 8.(घ) 9.(क) 10.(घ)

अजवायन के औषधीय प्रयोग

अजवायन का उपयोग औषधि के रूप में मुख्यतः उदर एवं पाचन से संबंधित विकारों तथा वात व्याधियों को दूर करने में बहुत गुणकारी होता है। इसमें लाल मिर्च की तेजी, चिरायते की तिक्तता, राई की कटुता तथा हींग और लहसुन की वातनाशक विशेष गुणवत्ता होती है। यह उदरशूल, गैस, वायुगोला, पेट फूलना, वात प्रकोप, आध्मान आदि व्याधियों को दूर करने के लिये लाभकारी है। इसके कुछ घरेलू प्रयोग उपयोगी और लाभदायक सिद्ध होंगे–

- अजवायन का बारीक चूर्ण 5 ग्राम और जरा सा सेंधा नमक जल के साथ फांक लें इससे अरूचि दूर होती है।
- अजवायन 5 ग्राम, 3 छोटी हरड़ और 1 रत्ती भुनी हींग– इन तीनों का चूर्ण करके जल के साथ फांकने से अजीर्ण दूर होता है।
- अजवायन काली मिर्च और काला नमक समभाग लेकर चूर्ण कर लें। इसे 3 से 5 ग्राम तक की मात्रा में गर्म जल से लेने से मंदाग्नि नष्ट होती है।
- अजवायन जल में पीस कर थोड़ा गर्म करके पेट पर लेप करने तथा अजवायन और काले नमक को अदरक के रस में मिलाकर सेवन करने से उदर शूल और अफारा तुरंत नष्ट होता है।
- अजवायन 40 ग्राम, काली मिर्च व सेंधा नमक 20–20 ग्राम, सबका चूर्ण करके रख लें। गर्म जल के साथ 5 ग्राम चूर्ण लेने से पेट का दर्द ठीक हो जाता है। यह वायु गोले की बढ़िया दवा है।
- अजवायन 3 ग्राम, वायविडंग 3 ग्राम, कपूर 1 रत्ती और गुड़ 5 ग्राम इन सबकी एक गोली बना लें। इस गोली के 2–3 बार सेवन करने से पेट के कृमि नष्ट हो जाते हैं। अजवायन का 5 ग्राम चूर्ण मठे के साथ लेने से भी पेट के कृमि नष्ट हो जाते हैं।
- अजवायन, हरड़ और सोंठ का चूर्ण गाय के दूध से बने मठे के साथ सेवन करने से आमवात के उपद्रव नष्ट हो जाते हैं।
- अजवायन का चूर्ण 5 ग्राम और 1 रत्ती कपूर मिलाकर पीसें, शहद में मिलाकर चटाने से उल्टी होना बंद हो जाती है।
- अजवायन, सौंठ, पीपलामूल, कालीमिर्च, इंद्र जौ, जीरा, धनिया, काला नमक सब समान भाग लें। धाय के फूल, पीपल, बेल का गूदा, अनारदाना, अजमोद, सब मिलाकर पहले चूर्ण से तीन गुना लें, मिश्री छह गुना लें। सबको मिलाकर चूर्ण कर लें। इस चूर्ण को 5 से10 ग्राम की मात्रा में जल के साथ सुबह शाम सेवन करने से अतिसार, संग्रहणी, मंदाग्नि, अरुचि, वायु गोला, पीनस, खांसी और उदर शूल में यथेष्ट लाभ होता है।
- अजवायन चूर्ण 5 ग्राम और गुड़ 10 ग्राम मिलाकर खाने और अजवायन का चूर्ण गेरु में मिलाकर शरीर पर मलने से शीतपित्त (पित्ती) में तुरन्त लाभ होता है।

शिवसेना उतरी गुण्डागर्दी पर, कंगना के ऑफिस पर चलाया बुलडोजर

सुशांत सिंह राजपूत की आत्म हत्या/ हत्या मामले में मुम्बई पुलिस द्वारा अभिनेता के परिवार की शिकायत पर एफआईआर फाइल न करने तथा पालघर के साधुओं की पुलिस की मौजूदगी में निर्मम हत्या को लेकर अभिनेत्री कंगना रनौत के ट्वीट तथा उस पर शिवसेना के बड़बोले नेता संजय राउत की विवादित प्रतिक्रिया से छिड़ी रार में शिवसेना गुडागर्दी पर उतर गई है। संजय राउत ने कंगना से मुम्बई नहीं लौटने को कह दिया, जैसे मुम्बई भारत का भाग न होकर राउत या शिवसेना की बपौती है।

इस विवाद ने तूल तब पकड़ा जब कंगना ने बॉलीवुड (मुम्बई फिल्म उद्योग) पर ड्रग माफिया की पकड़ होने तथा उनको उजागर करने की बात कही। कंगना के बयान के बाद महाराष्ट्र सरकार तथा स्थानीय प्रशासन ने शिवसेना के समर्थन में मोर्चा संभाला। एक विधानसभा सदस्य ने कंगना का मुंह तोड़ने की धमकी दी तो संजय राउत फिर बोले और कंगना को हरामखोर लड़की कहा। विधानसभा में कंगना के खिलाफ विशेषाधिकार हनन का प्रस्ताव भी आनन फानन में पास कर दिया गया।

इतने पर भी संतोष नहीं हुआ और 8 सितम्बर को बृहन्मुम्बई महानगर पालिका (बीएमसी) के कर्मचारी कंगना के ''मणिकर्णिका फिल्मस्'' के आफिस गये, अन्दर बाहर घूमकर कुछ निर्माण कार्यों को अनधिकृत घोषित कर नोटिस चिपकाया और अगले दिन कंगना के जवाब देने से पहले, सवेरे 10 बजे ही बुलडोजर, हथोड़े, ड्रिल मशीन लेकर पहुंच गये और आफिस में तोड़फोड़ का तांडव मचा दिया।

हाईकोर्ट के कई आदेशों के बाद भी आतंकी दाऊद की हाजी इस्माइल मुसाफिरखाना नहीं गिराने वाली बीएमसी ने कंगना का आफिस तहस नहस कर बदनीयती का परिचय दिया है।

अफसोस है कि महिला सुरक्षा, महिला सम्मान तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिये मुखर रहने वाले नेता, बुद्धिजीवी सबने बेशर्मी के साथ चुप्पी साध ली। हिम्मत हारे बिना सत्ता के मद में चूर मुख्यमंत्री को कंगना ने चुनौती देते हुए कहा है कि,''आज मेरा घर टूटा है, कल तेरा घमंण्ड टूटेगा।''

आई एस आई का 'अधिकारी' है आतंकी सैयद सलाहुद्दीन

जम्मू-कश्मीर में आतंक फैलाने वाली पाकिस्तान की एजेन्सियों और आतंकियों के बीच सांठगांठ जग जाहिर है। पाकिस्तान हर बार इस बात से इन्कार करता रहा है, लेकिन एक बार फिर भारतीय एजेंसियों के हाथ इस बात का पक्का सबूत लगा है। भारतीय सुरक्षा एजेंसियों ने एक नया दस्तावेज हासिल किया है, जिसके अनुसार प्रतिबंधित आतंकवादी समूह हिजबुल मुजाहिदीन का प्रमुख सैयद मुहम्मद यूसुफ शाह उर्फ सैयद सलाहुद्दीन पाकिस्तान की इंटर-सर्विसेज इंटलिजेंस (आईएसआई) के साथ काम कर रहा है तथा वह इस विभाग का अधिकारी है। पाकिस्तान खुफिया निदेशालय द्वारा जारी इस दस्तावेज में सलाहुद्दीन के व्यक्तिगत तथा वाहन का विवरण साझा करते हुए निर्देश है कि उन्हें सुरक्षा की मंजूरी दी गई है और अनावश्यक रूप से रोका नहीं जाना चाहिये।

पाकिस्तान को टेरर फंडिंग तथा मनी लाडंड्रिंग के लिये फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (एफएटीएफ) ने 2018 से ही ग्रे निगरानी लिस्ट में डाला हुआ है तथा 27 बिन्दुओं पर सुधार करने के लिये कहा है। सुधार नहीं होने पर उसे काली (ब्लेक) सूची में डाला जा सकता है। इस स्थिति में पाकिस्तान को इंटरनेशनल मॉनिटरी फंड (आईएमएफ), विश्व बैंक और यूरोपीय संघ से आर्थिक मदद मिलना बंद हो जायेगी। एफएटीएफ की अगली बैठक अक्तूबर माह में होने वाली है और भारत इस दस्तावेज के आधार पर पाकिस्ताान को ब्लेक लिस्ट में डलवाने का प्रयास अवश्य करेगा।

नगालैण्ड और मिजोरम जैसे प्रदेशों में हिंदू-यहूदी अल्पसंख्यक क्यों नहीं?

सुप्रीम कोर्ट ने 29 अगस्त को राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थान आयोग कानून 2004 को चुनौती देने वाली एक याचिका पर केन्द्र सरकार को नोटिस जारी किया है। इस याचिका में आबादी के हिसाब से राज्यवार अल्पसंख्यकों की पहचान करने की मांग की गई है।

याचिका में कहा गया है कि मुस्लिम, सिख,ईसाई, बौद्ध और पारसी, पांच समुदायों को केन्द्र ने अल्पसंख्यक घोषित किया है। यह टीएमए पाई फैसले के खिलाफ है। वहीं यहूदी, बहाई तथा हिंदू लद्दाख, कश्मीर, मिजोरम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, पंजाब, मणिपुर में अल्पसंख्यक हैं, लेकिन वे इन राज्यों में अपनी पसंद के शिक्षाण संस्थाओं की न तो स्थापना कर सकते हैं न ही संचालन। ऐसा इसलिए, क्योंकि इन राज्यों में उन्हें अल्पसंख्यक के तौर पर पहचान नहीं मिली है।

मुस्लिम देशभर में अल्पसंख्यक घोषित हैं, जबकि लक्षद्वीप, कश्मीर, लद्दाख में वे बहुसंख्यक हैं। इन राज्यों में बहुसंख्यक होने के बावजूद ये अपनी पसंद के शिक्षण संस्थान स्थापित और प्रबंधन कर सकते हैं। याचिका में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थान आयोग कानून 2004 की धारा 2(एफ) को चुनौती दी गई है। याचिकाकर्ता ने कहा कि पूर्व के फैसले में राज्यवार अल्पसंख्यकों की पहचान करने की बात कही थी, लेकिन सरकारों द्वारा इसका पालन नहीं किया गया ।

चीन पर तीसरी डिजिटल स्ट्राइक – 118 चीनी एप पर प्रतिबन्ध

भारत सरकार ने पबजी समेत 118 चीनी मोबाइल एप्स पर गत 2 सितम्बर को प्रतिबन्ध लगा दिया है। इससे पूर्व टिकटॉक, हेलो, वीचैट, यूसी न्यूज समेत 106 (59+47) चीनी मोबाइल एप्स पर लगे प्रतिबन्ध के साथ कुल 224 चीनी मोबाइल एप्स पर प्रतिबंध लग गया है।

सूचना और प्रोद्योगिकी मंत्रालय ने इन मोबाइल एप्स के दुरुपयोग, यूजर्स के डाटा को देश के बाहर ले जाने तथा दुरुपयोग करने की शिकायतें मिलने तथा इन एप्स की गतिविधियां भारत की रक्षा, सुरक्षा, संप्रभुता और अखंडता के लिये नुकसानदायक होने के कारण आई टी एक्ट की धारा 69 ए के तहत प्रतिबन्ध लगाया है।

यह भी उल्लेखनीय है कि चीन सरकार के नियमानुसार सभी चीनी–एप्स को यूजर सहित अपना सारा डेटा सरकार के साथ साझा करना अनिवार्य है तथा ऐसे कई मामले प्रकाश में आ चुके हैं, जिनमें चीन सरकार इन एप्स के माध्यम से दूसरे देशों की जासूसी करवाता है।

इन एप्स पर प्रतिबन्ध लगा भारत ने चीन सरकार को आर्थिक संदेश भी दिया है। भारतीय गेमिंग बाजार अनुमानतः सात हजार करोड़ का है और पबजी, टिकटॉक जैसे लोकप्रिय एप्स पर प्रतिबन्ध से चीन तथा चीनी कम्पनियों को सीधा नुकसान हुआ है। एक अकेले पबजी की ही बात करें तो भारत में यह एप 17.5 करोड़ बार डाउनलोड किया गया है, जो कि विश्व में कुल डाउनलोड (73 करोड़) का 24% है। इस एप ने 2020 में 1900 करोड़ की कमाई की। भारत में पबजी खेलते हुए बच्चों में हिंसा की प्रवृति, नकारात्मक सोच बढ़ने के साथ खेल में एक तरह का नशा हावी हो जाता है जिसकी परिणति हत्या, आत्महत्या, खेल के लिये पैसे चुराने तक की मानसिक विकृति में हो जाती है।

चीनी एप्स पर प्रतिबन्ध के बाद कई भारतीय आई टी कम्पनियाँ इनके प्रतिरूप बनाने लगी हैं, कई प्रतियोगी एप्स बाजार में आ भी चुके हैं। पबजी एप का एक प्रतियोगी एप ''फौजी'' लाने की घोषणा लोकप्रिय अभिनेता अक्षय कुमार कर चुके हैं। इस एप में खेलने वालों को भारतीय सेना की जाबांजी दिखेगी तथा इसके लाभ का एक भाग (20%) शहीद सैनिकों की सहायता को जाएगा।

चीन के स्वायत्तशासी क्षेत्रों में शी जिनपिंग का तानाशाही रवैया

चीन एक एक कर अपने सभी स्वायत्तशासी क्षेत्रों पर राष्ट्रपति शी जिनपिंग तथा कम्युनिस्ट पार्टी का तानाशाही का रवैया लागू कर रहा है। शिनजियांग प्रांत के उइघर मुस्लिमों पर अत्याचार, उनकी सांस्कृतिक व धार्मिक आजादी को कुचलने के बाद यही रवैया वह इनर मंगोलिया, ताइवान तथा हांगकांग पर भी लागू कर रहा है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इनर मंगोलिया पर चीन ने अवैध कब्जा कर लिया था तथा 1947 में इसे स्वायत्तशासी क्षेत्र घोषित किया था। गत दिनों यहां के लोगों पर चीन ने अपनी भाषा मेंडरिन थोपने का बड़ा फैसला लिया है। चीन की कम्युनिस्ट सरकार की तरफ से आदेश दिया गया है कि इनर मंगोलिया की स्कूलों में मुख्य विषयों को स्थानीय मंगोल भाषा के स्थान पर अब मेंडरिन में पढ़ाया जाएगा।

शी जिनपिंग के तानाशाही रवैये के खिलाफ इनर मंगोलिया में लोग जगह जगह प्रदर्शन कर रहे हैं। इन लोगों को अपनी मंगोल भाषा तथा संस्कृति के विलुप्त होने का भय सता रहा है। जहां एक ओर चीन सरकार अपनी नई नीति को लागू करने पर अड़ी है, वहीं प्रदर्शनकारी भी पीछे हटने को तैयार नहीं हैं। पिछले दिनों हांगकांग पर नया सुरक्षा कानून लागू किया गया है।

हाइपर सोनिक मिसाइल तकनीक वाला चौथा देश बना भारत

भारत ने इस 7 सितम्बर को स्वदेशी हाइपरसोनिक टेक्नोलोजी डिमॉंस्ट्रेटर व्हीकल (एचएसटीडीवी) का सफल परीक्षण किया है। इसके साथ ही भारत अगली पीढ़ी की हाइपरसोनिक क्रूज मिसाइल विकसित करने की तकनीक हासिल करने वाला चौथा देश बन गया है। अब तक यह तकनीक केवल अमरीका, रूस और चीन के पास थी।

डीआरडीओ ने एचएसटीडीवी के लिए स्क्रेमजेट इंजन का विकास किया है जो हाइपरसोनिक प्रणोदय (प्रापल्सन) तकनीक पर आधारित है। परीक्षण के दौरान एचएसटीडीवी ने मैक 6 (आवाज से छः गुना तेज गति) अर्थात दो किलोमीटर प्रति सैकण्ड की रफ्तार से निश्चित दूरी तरह की। इस तकनीक को लम्बी दूरी तक मार करने वाले मिसाइल सिस्टम को विकसित करने में काम में लिया जा सकता है। साथ ही यह कम खर्च पर अंतरिक्ष में उपग्रह लांच करने में सहायक होगी।

इस तकनीक पर आधारित मिसाइलें रक्षा क्षेत्र में विशेष उपयोगी होंगी क्योंकि दुश्मन देश के एअर डिफेंस सिस्टम को इनकी भनक तक नहीं लगेगी। आम मिसाइलें बैलेस्टिक ट्रेजरी फॉलो करती हैं, अर्थात इनके मार्ग को आसानी से ट्रेक किया जा सकता है। जबकि हाइपरसोनिक वेपन सिस्टम कोई तयशुदा रास्ते पर नहीं चलता, इसके कारण दुश्मन को कभी अंदाजा भी नहीं लगेगा कि उसका रास्ता क्या है।

प्रधानमंत्री मोदी तथा रक्षामंत्री ने डीआरडीओ के वैज्ञानिकों को आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने वाली इस उपलब्धि के लिए बधाई दी है।

'भारती' के संस्थापक दादाभाई का जन्मशती कार्यक्रम

भारतीय ज्ञान व विचार जानने के लिए संस्कृत आवश्यक

भारत के प्राचीन साहित्य में ज्ञान का अबाध भंडार है, जिसे जानने के लिए संस्कृत की जानकारी आवश्यक है। यह विचार रेवासा पीठाधीश्वर डॉ.राघवाचार्य वेदान्ती ने जयपुर के भारती भवन में आयोजित एक समारोह में व्यक्त किये। संस्कृत की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'भारती' जो गत 70 वर्षों से लगातार जयपुर से प्रकाशित हो रही है, के संस्थापक एवं आजीवन प्रबन्ध संपादक रहे समाजसेवी गिरिराज प्रसाद 'दादाभाई' के जन्मशती कार्यक्रम के समापन पर बोलते हुए राघवाचार्य जी ने कहा कि संस्कृत के प्रचार की महती आवश्यकता है।

इस अवसर पर भारती पत्रिका के दादा भाई पर विशेषांक तथा पाथेय कण पाक्षिक पत्रिका के गिरिराज प्रसाद शास्त्री पर अंक का विमोचन एवं भारतीय संस्कृत प्रचार संस्थान की वेबसाइट का लोकार्पण भी हुआ। कार्यक्रम में सीमित संख्या में उपस्थित श्रोताओं के समक्ष बोलते हुए रा.स्व.संघ के अ.भा.बौद्धिक शिक्षण प्रमुख स्वांत रंजन ने कहा कि श्रीमद्भगवत गीता में जिस निःस्पृह व स्थित-प्रज्ञ की परिभाषा दी गई है, ऐसे ही स्थित-प्रज्ञ देव तुल्य पुरुष थे दादाभाई गिरिराज शास्त्री, उनके लिए संघ कार्य पूजा के समान था। उन्होंने यह भी कहा कि वे देवदुर्लभ कार्यकर्ता थे। उन्होंने समाज जीवन के क्षेत्र में अनुकरणीय कार्य करते हुए राम मंदिर समेत कई जन आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस अवसर पर संघ के क्षेत्र प्रचारक निंबाराम, वरिष्ठ प्रचारक कैलाश जी, मूलचंद जी, माणकचंद जी, सुदामा जी, भारती पत्रिका के संपादक श्रीकृष्ण शर्मा, संस्थान के पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

प्रकृति वंदन कार्यक्रम में लिया संकल्प

हिंदू आध्यात्मिक सेवा फाउंडेशन तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा गत ३० अगस्त को पर्यावरण-वन एवं सम्पूर्ण जीव सृष्टि के संरक्षण के लिए प्रकृति वंदन का कार्यक्रम देशभर में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का आनलाइन उद्घाटन करते हुए संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत जी ने कहा कि भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में प्रकृति को ईश्वर की प्रमुख शक्ति के रूप में देखा जाता है। तथा हम (मानव) भी प्रकृति का ही अंग हैं इसलिए हमारे यहाँ प्रकृति के संरक्षण का हमेशा ध्यान रखा जाता है। उन्होंने यह भी कहा कि जिस तरह से हम पिछले दो-ढाई सौ साल से गैर जिम्मेवारों की तरह जी रहे हैं, इसके भयंकर दुष्परिणाम अब सामने आ रहे हैं और हमें पर्यावरण दिवस मनाने की जरूरत आन पड़ी है।

जयपुर स्थित संघ कार्यालय 'भारती भवन' में भी प्रकृति वंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर विल्व पत्र का पूजन किया गया। कार्यक्रम को अखिल भारतीय संयोजक गुणवंत सिंह जी ने संयोजित किया। कार्यक्रम में संघ के अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख स्वांत रंजन, राजस्थान क्षेत्र सेवा प्रमुख मूलचंद सोनी, कार्यालय प्रमुख सुदामा शर्मा, कैलाश जी आदि उपस्थित रहे।

स्वदेशी पिनाका गाइडेड मिसाइल का परीक्षण सफल

पाकिस्तान एवं चीन से भारत को मिल रही चुनौतियों के बीच भारत सरकार आयुध-रक्षा प्रणालियों के स्वदेश में उत्पादन पर जोर दे रही है। इसी क्रम में डीआरडीओ ने अपनी पिनाका मिसाइल को उन्नत करके नए मिसाइल सिस्टम का गत माह राजस्थान में पोकरण स्थित फील्ड फायरिंग रेंज में परीक्षण किया जो पूरी तरह से सफल रहा।

पिनाका मिसाइल सिस्टम को उन्नत बनाने के लिये इसमें पहली बार एडवांस्ड नेवीगेशन सिस्टम तथा कन्ट्रोल सिस्टम लगाये गये हैं। इनकी सहायता से अब यह अपने लक्ष्य को पहचानकर एकदम सटीक प्रहार करने में सक्षम हो गई है। वर्तमान परीक्षण में यह अपने दोनों मानकों पर खरी उतरी है।

डीआरडीओ द्वारा विकसित पिनाका मिसाइल सिस्टम की मारक क्षमता पहले चरण में 40 किमी थी, जिसे बढ़ाकर 75 किमी की गई। नए संस्करण में मारक क्षमता 120 किमी तक बढ़ाना प्रस्तावित है। पिनाका मिसाइल सिस्टम विशेष प्रकार के ट्रक पर लगा होता है, जिसकी 44 सैकण्ड में 12 गाइडेड राकेट दागने की क्षमता है।

इन मिसाइलों का उत्पादन डीआडीओ से तकनीकी हस्तांतरण अनुबंध के तहत निजि कम्पनी द्वारा किया जा रहा है।

संघ का परिचय वर्ग सम्पन्न

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संघ परिचय वर्ग 3 सितम्बर को ऑनलाइन सम्पन्न हुआ, जिसमें विद्यार्थियों से लेकर रिसर्च स्कालर व आईआईटी के विद्यार्थियों की सहभागिता रही। कोरोना काल में संघ के सेवा कार्यों से प्रभावित नागरिकों का संघ से जुड़ने का क्रम बढ़ा है। कोई भी, कहीं भी, कहीं से भी जुड़ने के लिए www.rss.org पर आवेदन कर सकता है।

कार्यक्रम तीन सत्रों में आयोजित हुआ। प्रथम सत्र में जयपुर महानगर प्रचारक उत्कर्ष जी ने प्रतिभागियों का अभिनन्दन करने के बाद संघ स्थापना का उद्देश्य एवं शाखा कार्यशैली की चर्चा की। द्वितीय सत्र में जयपुर प्रांत प्रचारक डॉ. शैलेन्द्र ने चर्चा की। अंतिम सत्र में जयपुर प्रांत प्रचार प्रमुख मनोज कुमार द्वारा प्रश्नों के उत्तर दिये गये।

राष्ट्रोन्नायक आचार्य शंकर

37

आलेख व चित्र
ब्रजराज राजावत

वैदिक धर्म का शंखनाद भारत के गगन में गूंज रहा था... और धरा पर आचार्य की विजय यात्रा अभी थमी न थी... वो राम की नगरी अयोध्या पहुँचे।

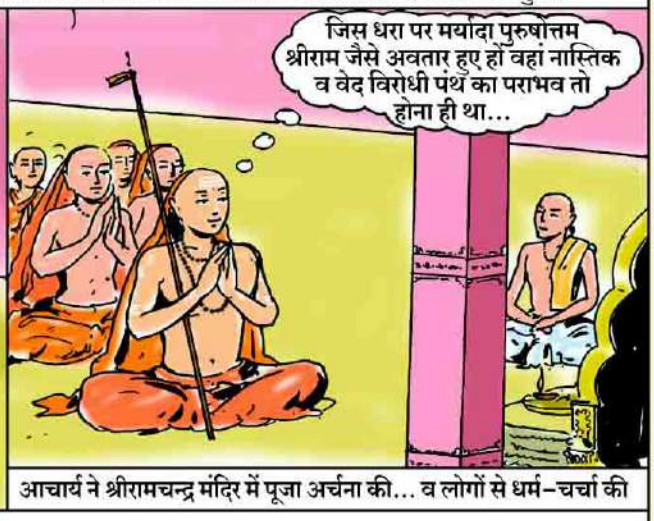

आचार्य ने श्रीरामचन्द्र मंदिर में पूजा अर्चना की... व लोगों से धर्म-चर्चा की

आचार्य हिन्दुओं के पितृ तीर्थ 'गया' धाम आये जो अब बौद्धों के पावन तीर्थ के रूप में जाना जाता था... क्योंकि बोधगया में ही भगवान बुद्ध को बुद्धत्व प्राप्त हुआ था।

असंख्य बौद्ध अब हिन्दू के रूप में परिचित होकर गर्वित हो रहे थे.. अब आचार्य विभिन्न नगरों में प्रचार करते हुए कामरूप-असम पहुँचे

प्राग्ज्योतिषपुर के राजा ने उनका भव्य स्वागत किया...

यहां के तांत्रिक अभिनव गुप्त से उनका शास्त्रार्थ हुआ... वे आचार्य की विद्वता और प्रज्ञा के आगे पराजय स्वीकारने को बाध्य हुए...

क्रमशः

पाक्षिक
पाथेय कण
16 सितम्बर, 2020

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87 अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2018-20 JAIPUR CITY/ WPP - 01/2018-20

सीकर में प्रकृति वंदन कार्यक्रम के तहत वृक्षारोपण

संघ कार्यालय जयपुर में प्रकृति वंदन कार्यक्रम

प्रतापगढ़ संघ कार्यालय में 'सेवा पथ ' स्मारिका का विमोचन

संघ कार्यालय जयपुर में 'भारती' पत्रिका के विशेषांक का विमोचन

दादा भाई की जन्म शताब्दी पर भारती भवन में आयोजित कार्यक्रम में पाथेय कण के अंक का विमोचन

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादकः मेघराज खत्री
प्रषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 सितम्बर 2020 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.)जयपुर

प्रतिष्ठा में,